
तिथि-

Price : Rs. 60.00

PRINTED BY RAVI OFFSET PRINTERS, MATIA MAHAL, DELHI
AND PUBLISHED BY KHAZANCHI RAM JAIN, MEHARCHAND
LACHHMANDAS, DARYAGANJ, DELHI.
FIRST PUBLISHED IN 1937

तुलसी-रामायण शब्द-सूची

लेखक

डॉ० सूर्यकान्त

डी. लिट्., डी. फिल्.

भूमिका-लेखक

प्रो० डॉ० जे० ब्लॉख

कॉलेज द फ्रांस, पेरिस



प्रकाशक

मेहरचन्द लछमनदास

अध्यक्ष—संस्कृत बुक डिपो

कूचा चेलां, दरियागंज, दिल्ली

विक्रय केन्द्र : स्ट्रीट नं० १, १ अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

आ-मुख

१६३० में प्रकाशित हुए अपने 'हिन्दी साहित्य के विवेचनात्मक इतिहास' में मैंने तुलसीदास की प्रमुख रचना 'रामचरितमानस' की विश्व-साहित्य की मूर्धन्य रचनाओं के साथ तुलना करके स्थापना की थी कि यथार्थ कवित्व की दृष्टि से 'रामचरितमानस' का विश्व-साहित्य में अपना निराला स्थान है। इसका आधार स्फुट था : मानवता की दृष्टि से राम चरित्र के तुङ्गतम ककुद् पर जा लगे थे; भावना की दृष्टि से उनका सीता-परिणय अभूतपूर्व परिनिष्ठित हुआ था; विप्रलम्भ शृङ्गार की दृष्टि से उनका सीता-विरह अपने जैसा आप था। 'रामायण' में स्वयं भगवान् ने मानव का रूप धारण करके मानव-चरित का आदर्श स्थापित किया था। सीता-परिणय का अभिनय करके उन्होंने मानव के हृत्तल में असीम प्रेम का सागर प्रवाहित किया था। राम का यह अयन सचमुच अनोखा था। राम के इस अयन का तुलसी ने अपनी 'रामायण' में रसाप्लावित ख्यापन किया है।

यदि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी की शेवधि में 'रामायण' के अतिरिक्त और कुछ भी न रहा होता तो भी इसका वसु स्पृहणीय बना रहता और उसका आस्पद अप्रधृष्य बना रहता; किंतु 'रामायण' के साथ-साथ इसमें कबीर की पदावलि थी; सूर का कान्हा-स्तवन था और साथ ही और भी बहुत कुछ था, जोकि साहित्य की दृष्टि से उत्कृष्ट था—सचमुच मूर्धस्थानीय था।

हिन्दी की इस अमेय गरिमा को आत्मसात् करके महात्मा हंसराज ने इसे भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का १६२८ में निश्चय किया—और इस ध्येय को समक्ष रखकर अपने डी० ए० वी० कालेज, लाहौर में मेरी नियुक्ति हिन्दी-विभागाध्यक्ष-पद पर की। एक पहुँचे वीतराग महात्मा का आदेश था—सिर झुका दिया—हिन्दी को उसके सहज आसन पर आसीन करने का संकल्प पल्ले बाँध लिया।

किंतु क्षेत्र में प्रवेश करते ही अपेक्षित सामग्री का निपट अभाव खलने लगा—न कोई इतिहास, न किसी भी ग्रन्थ का कोई भी प्रामाणिक

संस्करण, न कोई शब्दसूची और न किसी भी प्रकार का कोई भी 'कंकॉर्डेंस'। अवाक् रह गया माता की इस अकिंचनता पर; किंतु महात्मा का आदेश सामने काष्ठा बन कर खड़ा था—फिर हिन्दी के प्रति मन में प्यार भी था। बस, जुट गया इतिहास-संकलन में; और १६३० में 'हिन्दी का विवेचनात्मक इतिहास' प्रकाशन में आ गया।

एक कमी पूरी हुई—किंतु हिन्दी का भाषाविज्ञान की दृष्टि से विश्लेषणात्मक अध्ययन कैसा ? इसमें एक भी ग्रन्थ का प्रामाणिक संस्करण नहीं था—एक भी शब्दसूची नहीं थी। बस, जायसी के 'पदुमावत' का प्रामाणिक संस्करण तैयार किया और साथ ही उसमें आये विपुल शब्द-भाण्डार की वैज्ञानिक दृष्टि से तुलनात्मक समीक्षा भी प्रस्तुत की। अब सामने आया प्रकाशन का प्रश्न। पंजाब विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर प्राच्यविद्या एवं इतिहास के पारंगत विद्वान् थे। वे स्वयं उच्चकोटि के अनूचान थे, विद्वानों का हाथ पकड़ना जानते थे और समझते थे कि अनुसंधान को बढ़ावा कैसे दिया जाता है। बस, प्रथम साक्षात्कार में ही जायसी के 'पदुमावत' के प्रकाशन की स्वीकृति लिख दी और उसे पंजाब विश्वविद्यालय के प्राच्य प्रकाशनों में संमिलित करने का आदेश दे दिया। इसे कहते हैं अनुसंधान का सच्चा प्रेम ! काश, इसका शतांश भी आजकल के शिक्षाधिकारियों में स्थान ले पाता !

जायसी का पुनरुद्धार हो गया किंतु तुलसीदास अब भी अंधेरे में उपाहित पड़े रहे। उनके भावपक्ष पर तो श्यामसुन्दरदास एवं रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा था और अच्छा लिखा था किंतु उनके शब्द-पक्ष पर एक भी चितेरे का ध्यान न जा पाया था। इस काम की पूर्ति के लिये 'रामचरितमानस' की शब्दसूची तैयार की गई और उसके प्रकाशन के अनेक विफल प्रयत्न कर लेने के उपरान्त इस सूची को भी अपने महनीय गुरु डॉ० वुल्नर के समक्ष रखा गया। उस सोमवार के प्रातः ६ बजे का दृश्य आज भी आँखों के सामने आ जाता है। उसे स्मरण करके एक देवता की याद सताने लगती है; एक वदान्य प्राज्यमना मानवपुंगव की—जो मानवता के उत्कर्ष पर जा पहुँचा था। रचना को देखते ही स्वयमेव प्रकाशनार्थ अरज़ी लिखवाई और तुरन्त उस पर Sanctioned लिख दिया। फिर उस अरज़ी की नकल करवाई, जिसे उन्होंने पब्लिकेशंस बोर्ड के तीन सदस्यों[1] में प्रसारित किया। इसे कहते हैं आदर्श विद्याप्रेम—यह है एक मानव की शोलाखेज़ वदान्यता, जो अंहुर दुनिया को

---

[1] सर मोहम्मद शफ़ी, सर शादीलाल, सर टेकचन्द।

बदल दिया करती है, जो अनुसंधाताओं के म्लान दिलों में जान डाल दिया करती है। कौन-सा छात्र ऐसे महामहिम वदान्य वाइस-चांसलर के सामने सिर उठाने की गुस्ताख़ी कर सकता है! चरित्र एक अनोखी शेवधि है। वह जिसके पास होती है उसे तो वह बना ही देती है एक सच्चा विश्ववेदस्; यह सामने आये जनसमूह को भी उद्भासित कर देती है; यह अपनी परिधि के वायुमण्डल में भी चन्दन-कस्तूरी बसा देती है। निदान 'रामायण शब्दसूची' पंजाब विश्वविद्यालय की प्राच्य प्रकाशन सीरीज़ में प्रकाशित हो गई। किंतु इसे प्रकाश में लाने वाला महामना ६ जनवरी १९३६ को सहसा स्वर्ग सिधार गया; अपने प्रोज्ज्वल जीवन में वह नर-रत्न स्वाध्याय की एक परंपरा प्रवर्तित कर गया था। वह परंपरा प्रवर्तित रही और पंजाब में विद्वत्तापूर्ण प्रकाशन निकलते रहे।

'रामायण-शब्दसूची' १९३७ में प्रकाशित हुई। तब मैं ऑक्सफर्ड में अनुसंधान कर रहा था। मेरी अनुपस्थिति में इसके प्रकाशन का समस्त श्रेय मेरी सहधर्मिणी सुखदा देवी को है। उसीने इसके प्रूफ़ पढ़े, उसीने इसे प्रेस-संप्लव के पार लगाया। आज इसके नवोदय के अवसर पर वह चिरसंगिनी भी सामने नहीं है—वह अपनी इहलीला को संवृत करके वैराज-नामक लोक में जा पहुँची है। सुना है उस लोक में एकमात्र प्राज्यचरित्र मानव प्रवेश पा सकते हैं। देखें, क्या कभी हम भी उस लोक के द्वार को छू सकेंगे? पीछे उस स्नेहमयी का साथ इस जीवन का सहारा था—हो सकता है अपने नये आवास में भी वह हमारा हाथ सँभाल ले।

'रामचरितमानस' की शब्दसूची के बाद हमने 'पृथ्वीराजरासो' की शब्द-सूची पूर्ण की और साथ ही हिन्दी के प्रमुख कवियों की रचनाओं का 'कंकॉर्डेंस' भी तैयार कर दिया। इसी बीच हमें लाहौर से प्रस्थान करना पड़ा और वह अनमोल सामग्री वहीं रह गई।

'रामायण-शब्दसूची' के प्रकाशन पर साधुवाद का ताँता लग गया था—विशेषतः पाश्चात्य जगत् की ओर से। स्वर्गीय माताप्रसाद गुप्त ने उग्र साधना करके 'पदुमावत' के शब्दकोश के आधार पर 'पदुमावत' का संस्करण तैयार किया था। तत्पश्चात् उन्होंने 'रामायण-शब्दसूची' के आधार पर 'तुलसी-रामायण' का प्रामाणिक संस्करण प्रस्तुत किया था। उन्हें इस सतत साधना में प्रयत देखकर मुझे खुशी हुई थी। इस साधना का परिणाम शुभ हुआ था—इससे हिन्दी को चार चाँद लगे थे।

पुस्तक की माँग लगातार बढ़ रही थी। सन्त विनोबा भावे ने १९४७

में इसे देखकर इसकी महत्ता को पहचाना था और इसके प्रकाशन का प्रबन्ध करने की आशा बँधाई थी। किंतु सन्त एक जगह नहीं टिका करते; फिर उनकी दुनिया भी अनन्त हुआ करती है और उनके काम भी अगणित रहा करते हैं। बोलते कामों की लड़ी में 'रामायण-शब्दसूची' का मौन काम पिछड़ गया। फिर मैं भी संस्कृत की चिन्ता में इस काम को भूल-सा बैठा।

किंतु मेहरचन्द लछमनदास प्राच्य-प्रकाशन की एक प्रख्यात फ़र्म है। इस फ़र्म के कर्णधार श्री सुदर्शन मेरे अपने प्रियजन हैं। उन्होंने इसके पुनरुद्धार का भार अपने सिर ले लिया। वे धन्यवाद के पात्र हैं।

'रामायण-शब्दसूची' अपने नवीन आकार-प्रकार में पाठकों के सामने है। देखें, हिन्दी के विद्वान् इसका किस प्रकार और कितना उपयोग करते हैं।

सरसावा, सहारनपुर, यू० पी०
१.१.७३

सूर्यकान्त

Table of Contents

The publication has been delayed chiefly on account of my prolonged absence from home.

In conclusion, I have the duty of making certain acknowledgements.

Prof. A. C. Woolner, the late Vice-Chancellor of the University of the Panjab—who had been a source of inspiration for me from 1918 till 1935, and to whom the inclusion of the present volume in the Panjab University Oriental Series was due—is now beyond the reach of human thanks or praise. Had he lived to see this work in print he would have assured me of the completion of my plan and would have begun to evince livelier interest in the scientific advancement of the national language of India.

Likewise has left me, in my absence, my beloved daughter Indirā, in real sense one of the *begetters* of this work, who, indeed, exerted an ennobling influence on my being; all peace and glory be hers wherever she may be journeying to-day.

It is impossible for me to exaggerate the debt I owe to Prof. J. Bloch of College de France for writing the brilliant introduction to this work and to our esteemed friend Prof. R.L. Turner, Director-elect of the School of Oriental Studies, London for going through it at the request of the illustrious writer. To both these eminent philologists I tender my most sincere thanks and also those of the University of the Panjab.

Untiring devotion and loyalty were shown by my pupil-friends Bhāratamitra Śāstrī (Lahore) and E. Kṛṣṇa Vāriar (Madras) in assisting me in the actual preparation of the Index.

I should also express my thanks to Messrs. Mehar Chand Lachhman Das, Lahore, for their efficient printing-office.

But the one person whose name I must not pass over in silence, and to whom my debt with regard to this Volume is particularly heavy—is my wife Sukhadādevī; for to her did fall the task—exceptionally laborious and exacting of seeing this work, from start to finish, through the press, in my absence. It was she, who, in collaboration with my brother-in-law, Pt. Baladeva Sāstrī Nyāyatīrtha added meanings, selected different types, read proofs, and admirably carried out the hundred and one minor but essential tasks of checking and counter-checking, of taking charge of the administrative details inseparable

from a work of this size and nature. But for her untiring devotion and loyalty, the publication of this work in India and my studies in Europe would never have been possible; the more so after our bereavement, since when her courage, her patient learning of the art of suffering, her calm serenity in facing difficulties, her consuming restraint and love for literary service—all these have been, indeed, heroic.

Oxford, 12th May 1937. Sūrya Kānta

INTRODUCTION



Not many words should be necessary to introduce an Index of the words included in one of the most famous poems of India. I am not speaking only on behalf of students of philology, who are in constant need of correct and full documentation on the different stages of evolution of languages (and who by the way are rarely satisfied in the case of Indian vernaculars). But taking the standpoint of the general or literary reader, it can be said that few works are more worthy of gratitude, although they seldom find due recognition, than translating or indexing the masterpieces of literature; though such works really the productions of the best minds of humanity are enabled to enrich humanity. In India especially, where there is a common culture expressed in many languages, helps of this sort are most needed, so long as one is not contented with the mere sonority of the words added to a guess of their general meaning. Not only scholarly knowledge, but refined enjoyment in reading and cultivation of the mind mean more. If 'to criticise is to compare', as a celebrated French critic who was a Professor in the Sorbonne, used to tell us, comparison in its turn must have a foundation in a solid and careful knowledge of the things compared.

Now it is clear that Tulsī Dās is among the literary glories of India, one of the most worthy of attentive reading. To appreciate his merits it is not indifferent to notice what the words he uses are, in what circumstances or with what frequency he uses them. All the more it is true if examined from the point of view of the history of the language. Things being so, indexes of difficult words are far from sufficient, even supposing that many difficult words or expressions do not escape being included in them; moreover it is a well known fact that the more knowledge advances, the more difficult things appear ; so the only real help is in a full corpus of all words and forms, with of course full references allowing recourse to the context. In the case of the Rāmāyaṇa, I even regret that other works of Tulsī Dās should not have been indexed at the same time, and I hope they will be so one day, as it is hoped, to mention only this point, that a help towards the question of their authenticity may be found in comparing in detail the use of the language in the different works. Much profit has been derived in that way in the study of European literatures, ancient and modern. And of course I hope that more authors and works in other vernaculars will be indexed

in the same way, so as to extend the detailed knowledge, necessary to correct understanding and comparison, which is, as we have seen, the basis of literary criticism as well as of linguistic history.

But I shall say no more on that matter. I shall rather confine myself to more familiar linguistic subjects, having in view the position of the language of Tulsī Dās among other languages of Northern India, past and present.

The fundamental origin of the unity of Indian culture lies, as is well known, in Sanskrit literature, so also the Sanskrit language, or let us say, some form of it, has been the common basis of the Northern vernaculars. But the origin of Sanskrit is foreign to India; it is distantly related to the language in which I am trying to express myself here as well as to another one, more familiar to me by right of birth; it is much more closely allied to present Iranian languages and especially to their ancient forms, among which we know well Old Persian and Avestic. What do we know or guess of the period contemporaneous to or preceding its propagation among tribes (unidentified) of Hindostan ?

Among the clay tablets discovered in the royal archives of Hattusas, the Hittite capital [now the village of Boghaz-Koi, 90 miles east to Ankara] is a treaty concluded circa 1380 B. C., where gods are invoked as witnesses: the gods of the Mitani King are Mitra and Varuṇa, Indra and Nāsatyas, that is, gods known from the Veda and grouped as we see them only in the Veda. In the same locality has been found a treatise on the training of race horses, written in the Hittite language; but this language is interspersed, probably through Mitani influence, with a few Aryan terms, especially *aikavartana* meaning "one turn, one run," where the word for "one" has been formed with a suffix *-ka*, which in this word is only known otherwise in Sanskrit; Iranian for instance has old Persian *aiva*, Avestic *aiwa* (modern Persian *yak* is **aiva-ka*, not **aika* as in the Hittite treatise and in pre-Sanskrit). So traces of a people whose language and myths were closely connected with Vedic language and myths must have had some sort of contact with Western Asian peoples at a comparatively early date But who were they? Were they really those who carried the Veda and the Sanskrit language in India, or only parent tribes? Were they on the contrary invaders come back from India? The last hypothesis has been propounded, it is not the most probable of all, but there is no decisive proof against it for the present.

Anyhow it is certain that Sanskrit-speaking Aryans did enter India from the West. The progress of their culture can be followed in the different layers of Vedic lore, the more recent the works are, the more do they contain indications of advance towards the East in the Ganges valley, and later on towards the South. But if modern vernaculars may pride themselves on continuing all (with some reservations which we will see later) the language of these 'noble' invaders, it is not to be concluded that those newcomers 'civilized' India, any more than, ages after, did the Moghuls or Europeans. It is clear, and language itself testifies to it, that they themselves were more and more influenced by the conditions of their new home; on the other hand recent discoveries have shown that there had existed 15 centuries before

the time of the Mitani–Hittite compact, a brilliant civilization whose monuments are to be found in the Indus and Satlej valleys; that civilization must have had, directly or indirectly, some sort of influence on the Indian culture of the time. But nothing yet would show that the Aryans had any cognizance of that civilization. All they knew of it may have been the same thousand ruined cities which Aristobulus saw, when sent on a mission by Alexander the Great in the Indus valley.

However, it is clear that the unknown language or languages of the dense and civilized population of the country was or were superseded by the language of the newcomers, for some reason or other, possibly because of their technical superiority, possibly because of their organised learning and knowledge of script. At all events the oldest remaining literature of India was composed for and transmitted by Vedic schools. It has been noticed that language evolves slowly through that ancient literature, at least different works admit of differences in style which correspond to a real evolution of the language. What is more instructive, even in the oldest of them, traces are to be found of vulgarisms creeping into the hieratic form of speech, which testifies to the existence of dialects other than the normally written one. I shall refer here only to the existence in the Ṛgveda of a few words with *l* instead of *r*, the number of which increases in later texts; or to the fact that some sounds like *ḷ*, or forms like instrumental pl. in *-ebhiḥ*, although avoided by classical Sanskrit, appear again in Middle Indian. And it has been observed that certain Middle Indian forms or words continue directly pre-historic Indo-Iranian, in opposition to Sanskrit: e. g. Pali *sāmaṃ* "of oneself" is Avestic *hāma*-"same"; Prakrit *jhar*-("to pour") is in accordance with Avestic *žar*- and Greek *phtheírō* not with Sanskrit *kṣar*-. More than that *du*- in Pali '*dutiya*' ("second"), *dupada* ("biped") is not a local derivation of *dvi*- and has no corresponding form in Aryan, but is connected directly with Indo-European; compare for instance Latin *duplex* ("double"). So Prakrit *se* ("his," their") has a corresponding form not in Sanskrit, but in Iranian (Old Per. *šaiy*, Gāthā *hōi*, Avestic *šē*); an equivalent to the endings of the genitive of the personal pronouns *maha*, *tuha*, will be found only in Slavonic.

No wonder then that in the small group of Indian dialects which go by the name of Kafir, that is, Kati or Basgali, Prasun or Veron, Aṣkun, and Dameli, a pronunciation of the palatal *varga* should have been kept till today, which is anterior to the actual forms of not only other Indian dialects including Sanskrit, but also of all known forms of Iranian, to quote only one example, in the word for "ten" where the medial consonant was in the mother Indo-European language *k* (e. g. Latin *decem* (read dekem), Greek *déka*) and became sibilant in all Aryan speeches, except those (Skt *daśa*, Avestic *dasa*), Kati has *duts*.

So there are many indications that Sanskrit was not the only Aryan dialect used in India in old times. But predominant it undoubtedly became among them. Sanskrit learning became identical with learning, and so it has remained till a comparatively recent period. How it has given expression to a tremendous literature and has been cultivated for centuries does not need to be much dwelt upon. Although it was, on principle, identical with Brahmanism, it was adopted by all, non-Aryan and

foreign rulers adopted and propagated it; religions founded by reformers hostile to Brahmanism did not neglect Sanskrit expression; Middle Indian Pali was cultivated after the model given by Sanskrit, and it happens that forms which are found in old Pali texts were replaced later by those Sanskritic ones; Prakrit literature is not independent and could only be understood and enjoyed, as it was only written, by connoisseurs possessed of Sanskrit learning. Sanskrit gave and still gives more or less a model to the modern vernaculars, either in contributing to their poetical vocabulary or to the technical one, which in its turn affects the current speech. Even in distant Ceylon, where Brahmanism had not the pre-eminence, Sanskrit has got some influence, either through Buddhist culture or Tamil vocabulary, as may be seen from a glance at the Sinhalese Dictionary now in progress. In Tamil, which I have just mentioned, however old and original the literature, there is no period where Sanskrit influence is absent, and it has of course grown more and more. The legend of Agastya, the saint and savant, who mastered and civilized South India and Indonesia, is a good symbol of the spreading of Sanskrit culture in those parts. Finally Sanskrit forms the background of every literature written in any Indian language; it is the key to the understanding of all; it has been the most effective power in uniting India in the past; it symbolizes the presence of Indian culture in foreign countries.

To appreciate what the unifying force of Sanskrit has been, think only of those differences of words employed to designate similar objects not only in neighbouring provinces, but in neighbouring villages, and even among people of different breeds or castes living in the same villages. Old India had comparatively few towns, which had not the unifying influence of European capitals; communications between town and country or rather between cultivated centres and uncultivated people were few. There was every chance of unrestrained differentiation, had not Brahmanism given to all a norm in social matters including language. How Indo-Aryan languages were capable of separating can be realized by comparing Pali or Aśokan inscriptions, with a dialect which was in use nearly at the same time, but outside the pale of Brahmanic culture : I am thinking of those documents found in Chinese Turkistan, dealing almost exclusively with practical subjects, in a language originating in Panjab, but very peculiar and very often puzzling, a hard nut to philologists indeed.

Against this unifying power of Brahmanical culture, there has been no other equal power The British Raj for the first time has created political unity in India and at the same time has given an impulse to the local languages. In mediæval India, local powers ignored local forms of speech; at least the patronage of kings went first to Sanskrit learning. In so far as modern languages have been reduced to writing, it can be said that it was mostly for popular subjects legends and epics, religious songs and the like Moreover here again some sort of unifying tendency can be seen. Just as Sanskrit was considered fit for grammar, drama, kāvya etc., and as later on Śaurasenī must have been, at the beginning at least, the language appropriated to drama, or Māhārāṣṭrī to lyrics when reduced to writing, so Apabhraṃśa (not a local name) was connected with Jain teachings, Braj with Kṛṣṇa legend, Awadhi with Rāma, Maithili with Vaiṣṇavite lyrics. And as this is a volume dedicated to Tulsī Dās, I shall ask

whether he wrote his Rāmāyaṇa in Awadhi because he was by birth and residence a man of the Oudh country, or because a romantic poem had in 1575 A. D. to be written in the same language as had been before the Mrgāvat of Kutban and the Padmāvat of Muhammad Jaisi. It will be remembered that the majority of his other important works are written in Braj, the language appropriated to lyrics. In Braj is not only the Krṣṇagītāvalī, but the Gītāvalī comprising the history of and prayers to Rām.

It must be added that these specialized languages are nowhere really pure; there is so to say a reflexion of all *in each of them. In classical drama this is probably* less due to faults in copying than to the general fact that there has been no pure Prākrit dialect ever written. Returning to the poems of Tulsī Dās, in his Kavittāvali, Awadhi forms are found, where Braj would have spoilt neither style nor meter, e. g. *rāvaro* for *āpako*, or *morē* instead of *mērē;* and this is not to be attributed to any mistake, as critics agree that Tulsī Dās's Braj may be as excellent as his Awadhi. The same may be said of his contemporaries and compatriots Nābhādās and Narottam Dās, of Nand Dās "the seller of gems" dedicated to Kṛṣṇa, even of Sūrdās, whose Braj is recognised as the purest. As a matter of fact, if a few Awadhisms have crept into their Braj poems, it was perhaps due not only to their having been Easterners, but also to a tradition. Dr. Dh. Varma has aptly noticed that Vallabhācārya had studied at Benares and had established his headquarters at Arail in the vicinity of present Allahabad, so that a touch of the dialect of that place might have been recognized by tradition even after the migration towards Govardhan and Gokul.

Another remark may be made, viz. that few of the literary works of renown have come down to us in the exact form in which they were at first recited or written. Their fame itself has contributed to their being more or less adapted to modern taste and comprehension. With coming generations we find impressions of locality growing increasingly in the works of poets. For instance, in the so called Brajabuli of Bengal, changes in the work, both in recital and manuscript, have crept in, and we notice that Kabīr's poems have come down to us in a relatively modern mixture of Awadhi and 'Western' Hindi, barring those which are included in the Granth Sāhib, where no eastern forms are traced, but on the contrary Panjabi ones. And so who could definitely tell whether the linguistic mixture which is found in the poems of Mīrābāi has not been due to the fact that born in Rajasthan, she lived afterwards in Brndāban and in Gujarat (as experience goes, people do not usually change their language when changing their residence) or to the habits of those who recited her poems?

From what has been said, it is easy to understand why scholars find so much difficulty in fixing the localities and social groups amongst which each of the literary dialects has grown and developed A good example of this is Buddhistic Pali, which today appears to be associated with Ceylon tradition, and which indeed has had a strong influence on Sinhalese Indo-Aryan speech—perhaps saving it to a certain extent from all the consequences which might have been expected from its isolation. Pali or rather Māgadhī—as this is the name given to it by the texts themselves—is undoubtedly of continental origin; but what we can infer of Middle Indian Māgadhī either by comparing

it with Aśokan inscriptions or with the Māgadhī as used in Sanskrit drama, precludes the idea that there is in the Ceylonese books identity with Māgadhī any more than for instance in the Brajabuli just mentioned with Brajbhākhā. More stress may be laid on the linguistic connections which have been established between Sinhalese and the languages of the Western Coast (although in old Sinhalese inscriptions there is a nom. sg. in -e, e.g. *lene din(n)e*, "a cave has been given"), or to the fact pointed out by Sylvain Lévi that one of the oldest pieces of Pali canon, viz. the Suttanipāta, testifies to a good knowledge of Malva and Gujrat But what no one proposes is to discover one among the present vernaculars of India, in which typical facts would give evidence of direct descent from Pali I for one think the same might be said of other middle Indian literary languages. No doubt Śaurasenī may have been called originally after the name of the Mathura country; but the fortune of the dialect of that name seems to have been due to having been carried all through India by itinerant troupes of actors. So many centuries later Sleemann was present in the camp of Scindia at Rupaheli at a Kṛṣṇa-Rādhā ballet performed by a party of Brahman boys "educated at Muttra for this purpose, where a large tract of land is appropriated for their support".

As to Māgadhī (that is, standard Prakrit with very few conspicuous deviations) it was admitted in dramatic performances for the sake of especially comic effects; Māhārāṣṭrī was reserved for songs, other, so-called dramatic, dialects, have on principle, been nothing but momentary variants of the leading one. So that to my mind it is time lost to look in Bengali for instance for any remnant of old Māgadhī as we have it, except in one of its general features, viz. the pronunciation of sibilants. Nor can Saurasenī be used either for a similar purpose, as it is typical of a state common to all Indo-Aryan vernaculars excepting the North-Western ones. Lastly, connection between Jaina Ardhamāgadhī and vernaculars of localities situated between Magadha and Śaurasena country is only a guess based on the interpretation of an obscure name. As to Paiśācī I have never been able to discover in its name a local tinge or to derive any instruction from the local varieties attributed to that 'demoniac' form of speech (of which by the way we possess almost no document). On the contrary Apabhraṃśa language testifies to a certain degree to a locality, that is a Western one: which is in accordance with the fact that the oldest texts are in fact Western; and that is why I should avoid extending the same term to all old forms of the vernaculars, even if they have passed through a stage similar to the Western Apabhraṃśa as actually known. Taking a broad view of the matter, Apabhraṃśa is the literary form given to a Western vernacular, by adapting the same to Prakrit; the degree of adaptation, by reason of age and affinity, was strong here, much stronger than in the Prithī Rāj Rāsau or in Vidyāpati's poems; but the principle of recurring to an older literary form with a view both to giving more dignity to the language and to allowing more people to understand it, was after all the same.

Such were the general conditions under which Tulsī Dās wrote, it remains to be seen what the position of his vernacular was among the parent languages.

From the point of view of Philology, Awadhi is a well defined form of language, differing widely enough from the neighbouring ones, Bhojpuri on the Eastern and Braj

on the Western side. On the Southern side there are dialects which have been classified with it, viz. Bagheli and further South Chattisgarhi. As a matter of fact "Bagheli is scarcely worthy of being classed as a dialect separate from Awadhi" to use Sir George Grierson's own terms. As to Chattisgarhi, it does indeed differ somewhat from neighbouring Bagheli, but some of the points of difference are points of contact with Awadhi proper; as happens in colonial languages, Chattisgarhi has preserved archaisms, while admitting of course at the same time elements borrowed from more Eastern forms of speech. As a result of this we may include under the name Awadhi practically the whole group of dialects to which Sir George has given the name of Eastern Hindi. This group, as we have just mentioned, differs both from Braj on one side and from Bhojpuri on the other. From Braj it differs in showing in the direct case of masc. sg. of the 'long' noun *ā* instead of *au* or *o*; in using *kā*, *k* "to" instead of *kau* or *ko*; *ma* "in" instead of *mẽ*, in ignoring *ne* "by" accompanying the agent of the past verb; in having no *-g-* future-suffix On the other hand, the relative pronoun, which is *jo* in Awadhi as in Braj, is *je* in Bhojpuri, so already in the settlement of which Tulsī Dās is said to have been an arbitrator, in 1612 A. D.; *jẽ upar likhā sẽ sāhī* "what has been written above is correct." For the postposition in *k-* meaning "to", Bhojpuri has *ke;* it possesses also a postposition *lā* which Awadhi ignores; it also has a-*l*-suffix in the past participle, which Awadhi ignores too. For "my", Braj has *mẽro*, Bhojpuri *mor*, whereas the Awadhi form is *morā*, with the same radical word as the second, but with a suffix as in the first. In the verb, to express the future Awadhi has two forms: one in-*ba*, the other with a suffix *-ih*; of these, the first is to be found in Eastern languages, the second in Braj, Bhojpuri on its part has developed a-*l*-form which recalls similar ones in other Aryan languages; but not in Awadhi or Braj, whose *-g*-future is on the other side unknown further East.

It is not necessary to go into further detail. I shall just mention a compound verbal form peculiar to Awadhi, viz. the past 1. *dekheũ* "I saw", 2. *dekhe* and *dekhisi*, 3. *dekhisi*; to quote one instance from Tulsī Dās, *racesi upāi* "he managed means". This past tense is capable of gender, e. g. (Ayodhyā II, dohā 19) *kīnhesi kapatapabodhu, kahisi kathā* "she planned the cunning tale, she told a story". But in mentioning that these forms are already known to Tulsī Dās it must be pointed out that he uses them only when implying contempt to the subject; 2. *dekhehi*, 3 *dekheu* are the normal forms, more in accordance with the general scheme of the present tense (although the 2 sg. present is in *-asi*) and consequently with the majority of the corresponding forms in old vernaculars. So also in the present itself, Dr Saksena observes that periphrastic tenses, which are usual in modern Awadhi, are seldom met with in the Rāmāyaṇa, where the simple Present Indicative and the Present Participle ending in *-ta*, fem *-ti* are usual, again in accordance with old forms of other vernaculars. For instance, *jāta* "he goes", *karata* "he does" may be, among others, Braj as well as Awadhi; Braj *milae*, Awadhi *milai* are also nearly identical

There are indeed many points of contact between Awadhi and the neighbouring languages, and especially Western ones. As a matter of fact, as we have pointed out, the name Eastern as opposed to Western Hindi is a creation of Sir George Grierson. And

with excellent reasons; but he himself notices that among the people there is (or rather was, so great has been his authority) "no difference in name given by people among the various Aryan languages spoken between Panjab on the West and the river Mahānandā on the East and between the Himālayas on the North and the river Narmadā on the South."

It is true that, to put it in the words of Mr. Blunt, in his U. P. Census Report for 1911, "an inhabitant of a given Tahsil can doubtless understand the dialect of his own and all neighbouring Tahsils and possibly those of several immediately beyond them, but a man from the Braj country can certainly not understand a man from the Bihari country, or a man from the Bundeli country one from the Pahari country." On the other hand Braj has a comparatively close connection with Rajasthani and Gujarati; and so has Hindustani with Panjabi. The common feeling has not given authority to these last connections, and officers of the above mentioned census left them unnoticed as they found it impossible to distinguish, in accordance with the philologists' point of view, between Western Hindi, Eastern Hindi and Bihari (any more than between Hindi and Urdu).

We have seen both the analogies and discrepancies which render acceptable both positions. Let us now look at the languages surrounding those already discussed.

Although Bhojpuri, as has been mentioned above, has points that are common with its Western neighbour, it has more affinities with the Bihari group, which in turn distinctly groups itself with the more Eastern languages, Bengali, Assamese and Oriya. This can be seen for instance in the more or less complete absence of any distinction of gender in the grammar of these languages. In them also Sir George Grierson has shown that the so called genitive postposition is used at the same time to denote the direct case of the plural number, e. g. Bhojpuri *hamni-ke* 'of us', *hamni-kā* 'we', Maithili *hamār* "of me, of us", *hamrā* [*sabh*] "we"; Bengali *āmār* "of me, of us" *āmrā* "we", *santāner* "of a son" *santanerā* "sons". In all of them the past tense of the verb is formed with-*l*-: Bhojpuri *dēkhlē*, fem. *dekhli* "he, she saw", Bengali *dekhulo*, Oriya *dekhilā*, Assamese *dekhul*. The future suffix -*b*- we have already found in Awadhi.

On the Western side, Braj and Bundeli border on cognate dialects, which although possessing distinct individualities are very close to each other and also to Hindi. Here again we see in operation that law under which the limits of the linguistic phenomena do not coincide with the limits of the recognized dialects; the dialects are defined by a combination of linguistic features, each of which is not necessarily their own. To those differing, but evidently connected dialects Sir George Grierson has again given a common name viz. Rajasthani. As a matter of fact the gradual progression of small differences here also is such that it would not be impossible to include with them the more distant Gujarati. This connection is borne out by history, not only because in mediaeval times Gujarat was considered a part of Rajputana, but also because it has been established that the Gujarati language itself and Marvari are derived from a common language which was still in use during the sixteenth century. On the other hand it is said that in the seventeenth century Jaipuri had many more points of

agreement with Western Hindi than today.

It must also be mentioned here that to the Rajasthan group have to be added not only the Bhil dialects occupying the hill country dividing Gujarat from Rajputana and Khandesh, but also the Aryan dialects of Himalaya which were brought there by Rajputs. I may here refer the reader to a remarkable sketch-map given in the introductory Volume of the Linguistic Survey of India, p. 181, showing the affinities on one side between Central Pahari and Eastern Rajasthani, on the other side between Western Pahari and Western Rajasthani. As to Nepal, its language originates in a combined settlement of the same Gurjars who extend over Eastern Rajputana and of Mewar Rajputs.

It is only when we come to the South-Western limits of the continental Indo-Aryan area, that we find a more independent language: "Marathi is a language with well-marked frontiers, and does not merge into any of the neighbouring forms of speech." There are indeed towards Khandesh and Central India mixed dialects affected by Bhili, Chattisgarhi or Oriya, but these do not constitute progressive links with the vernaculars situated next to them. Marathi has points in common with cognate speeches of all directions, e. g. it distinguishes initial *v* and *b* like Gujarati (and partly Rajasthani), Sindhi and Panjabi; it has a cerebral *ḷ* like Gujarati, Rajasthani, Panjabi and also Oriya; it possesses a future tense formed with *l* like some Rajasthani dialects and Bihari, a *-ṇ-* infinitive like central dialects, a *-l*-past like Eastern languages It has preserved three genders in the noun with Gujarati and Himalayan Bhadrawahi. But it also has preserved the Prakrit forms in *mājhā* "my", *tujhā* "thy", it preserves also (but not alone) the *-s(i)* of the 2nd person singular and *-nti* and *-ntu* of the 3rd plural of verbs It has also special creations, among them the so-called genitive postposition-*cā*, the conjunctive participle in *-ūn*; and pronunciation of its own, due to local habits which it shares with the neighbouring Dravidian languages: one is the *s, ts, dz* pronunciation of *ś, c, j* before *a*, *ā* and *u*; another, the breaking initial *e* and *o* into *ye* and *wo* In Marathi syntax itself admits of a trace of a Dravidian construction, viz. the logical subject of an oblique participle put in the nominative, e. g. *pāusāḷā saryā var* "after the end of the monsoon", (that is, something like *prāvṛṣaḥ sṛtād upari*), *tumhī ālyā śivāy* "except you(r) having-come". This construction may be comparatively recent, or else has been considered as vulgar by old Marathi poets, as Tukārām has *maj ālyā vīṇā* "without my having-come." Influences of similar origin can be detected in at least another language neighbouring Dravidian country, viz. Sinhalese (colloquial) . *mama kī dē* "the thing which I have said" *(aham-kathita-kāryam)*.

Standard Marathi is the Deśī spoken between the Ghats and the frontier of Berar. It is not improbable that it has spread from there towards the sea coast That might explain why Goanese Concani shows many affinities with Gujarati, although separated from it by Marathi dialects.

We now come to the Western Indo-Aryan languages. Among them one is very close to Hindi, viz. Panjabi. For instance, the word for a horse is *ghoṛā*, oblique *ghoṛe*, pl. *ghoṛe*, oblique *ghoṛā̃*, as it would be in Hindi dialects other than Hindustani proper

In the feminine plural, *ghoṛā̃* is both direct and oblique of *ghoṛī*. The so-called genitive adjectival suffix is *dā*, not *kā* as in Hindi, but it works in the same way. As a matter of fact there are reasons to believe that Hindustani is not really at the start, as has been said, the dialect of Delhi or of the surrounding villages, but the dialect of places near or pertaining to the Panjab. There are, as might be expected, features pointing towards another direction; for instance "I" is *maĩ* and "mine" *merā*, but for "we" Panjabi has *asī* and so *tusī* for "you". This characteristic is more important than the preservation of initial *v* or cerebralization of intervocalic *ḷ* and *ṇ*, or even a past *sā*, *sī* "I, thou, he, she was" which as far as it is a survival of Skt. *āsīt* can be detected in other languages, North Western and Eastern It is even more important in a way than the curious tone following disaspiration of voiced aspirated consonants eventually accompanied by their unvoicing, which is peculiar to Panjab and neighbouring districts. No form like *asī̃* is to be found in any of the languages examined till now. In all those, *s* preceding *m* has become *h* as it did in Pali or Prakrit. But similar forms are to be found in other languages of the Western and North Western zone. With Panjabi *asī̃* go Lahnda *assī̃*, Sindhi *asī̃*. Kashmiri *asi* (cf. *sônu* "our"), Shina oblique *asẽ*, Mayā̃ obl. *asā̃* and among the Dardic, Prasun *asẽ*; but Kati has *ima*, Gawarbati *ama*, Pashai *hama*. So although *-ss-*, *-s-* in such a case are characteristic of the region, they are not universal here. In a reverse way, it is not impossible to find similar treatment of *sm* farther east. Think only of Hindi *bisarnā* "to forget" in which as in Kashmiri *sôrun* "to recollect" *sm* has become *s(s)*. In older times Śaurasenī Prakrit has in the locative singular of the noun *aggimmi*, but in the pronoun *tassiṃ*. Aśoka has—*nota bene*: in Central and Eastern inscriptions—*u (y) ā n a s (s) i* "in the garden", *j a n a s (s) i* "among people"

There are other features typical of the Western zone. But before indicating some of them, we must say a word about the less known small dialects which constitute that zone. The language of Kashmir is one of them. Although Sanskrit culture has been strong there, there can be no doubt that it belongs to what has been termed the Dardic group which occupies the hills, or rather the deep valleys farther North and West : the Indus valley North of Darban, including the Gilgit and Astor valleys, up to Baltistan, the upper Swat valley, Kunar and Chitral, lastly the district farther West down to the Panjshir river. West of the Indus this country borders Iranian dialects; in the North-eastern hills, it borders Tibetan languages and the mysterious Burushaski: mysterious as regards its origin and connections, but no longer mysterious in itself, since the recent publication of the excellent book dedicated to it by Lt. Col. Lorimer. In the territory thus defined, no less than fourteen or fifteen independent Indo-Aryan languages are spoken. They are of course not important if considered from the number of their speakers. Kashmiri, which is by far the most important of them, is spoken by less than 1½ million of people. Shina which comes next to it, has less than 100,000, as to Khowar, suffice to mention that in the state of Chitral, with a population of about 100,000, eleven languages are spoken. But to the philologist the importance of those small languages is great. They have nearly all lived beyond the pale of classical Hindu culture, separated from the language of Hindustan, with few communications between

themselves; the result being that by whatever mixture they have been affected they have preserved archaic features and at the same time show independent developments. When did they separate from the rest of the Indo-Aryan stock and under what circumstances? Nobody, of course, knows.

The country is still difficult of access, and the discovery of the languages is still in progress. Nevertheless, owing to the researches of Sir George Grierson and Dr. Morgenstierne, enough is known at least of their main features. In them voiced aspirates have lost their breath. They possess the distinction of *s* and *ś* (this last being eventually capable of opening, as in Kashmiri *hal* which is of course not English *hall*, but Sanskrit *śālā*). They often preserve conjunct consonants, notably those with *r* or a sibilant; eventually preserve even intervocalic ones. In some of these features they agree with Iranian, but their grammar at least is distinctly Indian. Nay, some of the features they have, as just mentioned, in common with Indo-Aryan languages of the Indus valley, for instance in not allowing a short vowel to lengthen before a simplified geminate consonant, e. g. Kashmiri *bata*, Shina *bắt* like Sindhi *bhatu* are derived from a word similar to Lahnda and Panjabi *bhatt* as opposed to Hindi etc. *bhāt* from Sanskrit *bhakta*, Middle Indian *bhatta* (Sinhalese also has *bata*); of course in Shina *rāt*, Sindhi *rāte* the long vowel is not due to the position, but continues the vowel of Skt. *rātri*. Another feature which is common to Dardic and Indus-Aryan is the frequent use of pronominal suffixes added to nouns or verbs, examples of which will be found in Kashmiri *gupu-m* "I concealed him", *gupū-m* "I concealed her" (cf. *di-m* "give me"), Sindhi *māru-me* "I beat him," *māra-me* "I beat her" (cf. *piu-me* "my father").

These resemblances and others show that Dardic, however peculiar in appearance, cannot be separated from the rest of Indo-Aryan. There is a connection between Dardic and Lahnda first as there is one between Lahnda and Panjabi and Hindi. Now, we are in a position to infer a similar connection in the case of Indo-Aryan language other than Sinhalese, spoken outside India; here I am referring to Gypsy, or rather Gypsy dialects, which have been driven West for some yet unknown cause and at an unknown period (in the 5th century?) and speakers of which are found in Western Asia, Northern Africa, Europe and America; in America some people still say *sa dives* for "all day", *ker sig* "do quick", *šun man* "hear me", *del mande pāni* "give me water", *beštalē āpro pūv* "sit down on the ground."

The Gypsy dialects are divided into two groups, one which is found in Western Asia, the other in Armenia, Europe and America. In the first, Indian voiced aspirates have lost their aspiration, in the second they have become surd, hence Nuri (Palestine) *dav*, Armenian and European *thov* "wash", (cf Hindi *dho*), or Nuri *ben*, European *phen* "sister" (cf Panjabi *bhaṇ*), or Nuri *gam*, European *kham* "sun" (cf Hindi *ghām*), hence European *phar* wherefrom Armenian *pār* above mentioned, as opposed to Hindi *bhāī*. Another distinction between the same groups is that intervocalic *-t-*, which has been lost in Hindustan, has become *-l-* in Europe, *-r-* in Syria compare Prasun, Kalasha (and East Iranian dialects) *-l-*, Khowar *-r-*; so in these dialects there is a [illegible] consonant

to mark the third person singular in the verbs: Eur. *kerel*, Nuri *kerär* "he does", cp. Khovar *šer* "there is" (Skt. *śete*), Kalasha *dali* "he gives." Another distinction, less important, is that cerebral *ḷ*, which is kept in Syria, has been changed into *l* in Armenia and Europe; but the retention of cerebrals is in itself important.

The late Dr. Sampson was inclined to believe that the *phen* and *ben*-Gypsies separated in the Persian territory about the tenth century A. D. They all have features in common with both Dardic and Hindi languages, for instance, on one side, distinction of two sibilants: Eur. *šel* "hundred", *sovna-kay* "gold", cf. Khovar *šol, sorm*, Shina *šäl, sōn*; on the other side *amē* for "we", *tumē* (Nuri *tme)* "you". The sibilant followed by a dental stop is treated both ways according to its position in the word : Eur. *vast*, Nuri *xast* "hand" (cf. Khovar *host*, but Shina *hãt*); Eur. *ušt*, Nuri *ōšt* "lip" (cf. Kalasha *ušt*, Kashmiri *wuṭh*), but Eur. *than* "place", *thulō* "fat". Other groups are of course treated in a purely Indian fashion: Eur. *drakh*, Nuri *idrāk* "grape"; Eur. *mačo*, Armenian *mančav* "fish."

Thus whatever exact part of India those vagrant people may have migrated from, they undoubtedly carry with themselves an Indian language; much they have borrowed (owing to their recognized character, some would say, stolen) on the way; and as a matter of fact they use the language of the places they live in, as long as they care to be understood by everyone. Those borrowings in vocabulary, it may be mentioned, have been used to detect the routes of their migrations; through them it has been possible to recognize that long after the split between the Western Asiatic and the Armenian European branches, there has been another split in Europe itself; and that in Egypt are today to be found, side by side with Asiatic Helebi, descendants of prisoners from Moldavia by the Turks in the seventeenth century, viz. the Ghagar. Is it not a remarkable fact that they all are by right of birth or rather inheritance possessed of linguistic material and habits which render them as fit as many in India to be introduced to Northern Indian languages and literary masterpieces, among those last the Rāmāyaṇa of Tulsī Dās ? Indian philologists must not neglect those vagrant brethren, although they are perhaps not of those of whom India may be particularly proud. Real Aryan culture has been propagated in the opposite direction, in the Dekhan and South India first, and then to the Far East. But there it is Sanskrit which has been the main vehicle or at least the symbol of Indian civilization. And prolonged contact with Hindu culture has rendered those Easterners, if less able to catch the meaning of the words employed by Tulsī Dās, on the other hand much better prepared to appreciate his teachings and to enjoy his literary merits.

16 Rue Maurice
Bérteaux, Sevres (S. O.)
Paris

J. BLOCH

तुलसी-रामायण
शब्द-सूची

तुलसी-रामायण
शब्द-सूची

अनामा १. २३. २
अनायास—विना परिश्रम २. २९८. २; ७. १८०
अनायासा १. १८०. ४
अनारंभ—आरंभ न करना ७. ६२. ३
अनिकेत ७. ६९. ३
अनिंदिता—निन्दा-रहित ७, ४७. ५
अनिप—सेनापति ६. ६६. ५
अनिमा १. ३८. २; २. २१४. ४; ७. ५२; १२६
अनिर्वाच्य ५. ८. १
अनिल,—वायु अनल—संघाता १. १३. ६
अनिशं—सदा ७. २२५
अनी—सेना २. १२७. ५; २२३. २; ६. ५९. २; निसिचर—६६. ३; ७६. २; ९४. १; १०२. १; तमीचर—१११. २; निसाचर—११२. १; ११४. ४; मदमोहमहाममतारजनी तमपुंजदिवाकरतेज—७. ३२. ३
अनीक—सेना १. २२०. ३; कलुष—दमन २. १०६. ३; रिपु—६. ८९. ४; ७. ५०. ३
अनीति १. १४८. ४; २१५; २२६. ४; ७. ६६. २; ३; १५८. ५
अनीती १. ७९. ४; ५. ४७. ३; ६. ७५. २
अनीसहि—विना स्वामी १. ९४. १
अनीह—इच्छा-रहित १. २३. २; ७३; १३३. १; २३७; ३. ५८. ४; ७. १८६. २

अनु-कथन १. ६२. २;—दिन ६. ४६
अनुकूल-पति १. २२०; २२२; २६९
३७४; २. ९; २०६; २६१. १; ३
१०; ६. १३३;—पति ७. ४७. २
२१५
अनुकूला १. ३१. ४; १७६. १; ३१३
२; २. ३३. ४; ३५. २; ५४. २
१०५. १; २६०. २; २६८. १; ३
२१. २; ५०. २; ४. ६. १; ५
४८. ३; ६. ८०. ४
अनुग्रह—दया १. १; १६७. २; १७९
२; २१८. १; २३०. ४; २४४. ३
२. ४. ४; ५४. ४; १०३. ४; १५२
४; ५; २०६. १; २६७; ५. ७. ३
७. ६७. ४; ९८. १; १७७; १७८.
अनुगामी १. ३१४. ४; ३७६. ३;—प्रेम
२. ४; ५. ४; २२८. ४; ३१५. ४
अनुचर—सेवक १. ३११. १; २. २५४.
३; ३. ३१. १; ६. ५६. २
अनुचरन्ह ७. ८० २
अनुचरी—दासी ५. ९. ३
अनुचित १. ८६. १; २७१. २; २८६. १; २९१. २; ३०६; ३०९. ४; ३१०; ३११. २; ३१८. ३; २. ११. ४; ४६. ३; ९७. २; ९८. ४; १७५; १७६. ३; १७८. २; २३०. ४; २३२. २; ६. १३०. ६
अनुज—छोटा भाई—स १. ६२. ३;—भूप १. २०६. २; २३७. २;—समेत २३९. ५; २४३. ३; २४५. ३;

४; २४. ५; ३९. ४; ५४. २; ३;
४; ६०. ५; ६७; ६८. १; ७३. २;
७४. २; ३; ७५. ३; ४; ७९. २;
८०. १; २; ३; ८३. २; ८४. ४;
८७. ३; ८८. ४; ९१; ९३; ९४;
९५. १; ४; ९६. १; २; ९६; ९७.
३; ९९. १; १८०. ३; १०१. १;
४; १०३. १; ४; १०४. २; १०७.
१०८. २; १०८; ११०. १; ११४.
२; ११६; ११९. ५; १२०. ४;
१२१. १; ३; १२४. ३; १३२. २;
१३३. ४; १३७; १३८; १३९;
१४१. २; १४२. २; १४३. ३;
१५६. १; ४; १६१. १; १६३. ४;
१६६. ४; १६८; १७८. ४; १७९.
४; १८०. ३; १८१. ३; १८७; १९७;
२०५. १; २११. २; २१५. ५; २२९.
२; ३; ४; २३२. ३; २३९. ४;
२४४; २५३. ४; २५४. १; २५५.
४; २५६. २; २६३. २; २६७. ३;
२६९. २; २७१. ३; २७८. १; २;
२७९. ४; २८०. २; २८६. १; ४;
२९०. १; २९४. २; ३१६; ३२२.
२; ३७०. १; ३८९; ३९४. ४; २.
२; ३. ४; १०; ११. २; १४. ४;
१५. ४; २२. २; २५. ४; ३१. २;
३५. १; ३६. २; ४३. २; ४६. २;
४७. ३; ४९. ४; ५१. १; २; ५२.
२; ५८. २; ७२. १; ७५. ४; ८०.
३; ८२. ३; ८३. २; ४; ८५. ४;

९४. १; ९५. १; ३; ९५; ९९. १;
१०७. १; १०७; १२१. २; १२३.
१; १२६. ४; १२६; १२७. ३; ४;
१३४. ३; १३९; १५४. २; १५८.
१; १५९. १; १६२. २; १६३. ३;
१६६. २; १७०. ३; १७३. १;
२०१. १; २०४. ४; २०५. ४;
२०९. ३; २११. ३; २१५. २; २१५;
२१८. ३; २२०. ४; २२४. १;
४; २२६. ४; २२७. २; ४; २२८.
१; २३५. २; २५६. ४; २६०. ३;
४; २६२. २; ३१५. ३; ३१६. ३;
३१७. ४; ३. ५. १; ८. १; १०.
४; ५; १४. १; १५. १२; १६. ११;
१७. ३; १८. ७; २८; ३०. ४; ३३;
३४. ४; ३७. ८; ४३. १; ५३. ४;
५४. ३; ५८. २; ५९. ५; ४. ३. ३;
५. ३; ९. ४; १०. १; १२; १२.
३; ४; १४. ३; २५. २; २९. ४; ५;
३२. ३; ५. १. २; ७; ८. १; ९.
४; १०. २; १२. ३; १४; १७. २;
२७. २; ३७. ३; ४१. ३; ४२. २;
३; ५; ४३. १; ४४. ४; ४७. १;
४९. ४; ५०. ५; ५२. १; ४; ५३.
३; ५७. २; ६१. ३; ६. २; ४. १;
८. १; १०; ११. ३; १२. २; १९;
२२; २३. ४; २६; ३०; ३३. ४;
३४; ३९. ५; ४२. २; ४; ४२;
४३. २; ४५. १; ४; ४६. १; ३; ५२.
१; ३; ५५. २; ५७. ५; ६०. २;

महां—७. ६२. ४;—ईसा १४२. ४;
महा—१७०. ३; २०८. ९
अहित २. १६३. ४; ५. ४१
अहिन्ह ५. २. १
अहिनी—सर्पिणी ३. २२. २
अहिप—सपेरा २. २५५. ४
अहिल्या १. २५६. ३
अहिवास—सौभाग्य, सुहाग १. ३६७. २; ६. १०; २२; १५७. ५
अहिवाता १. ९१. २; ७. १७. १
अहिवातु, अन—सूच २. २६. ४
अहीर ७. १९८. ६
अहीँसा ७. २०८. ११
अहीसु—शेषनाग २. १२७. ५
अहेर—शिकार २. १३७. ४; १३९. १
अहेरी—शिकारी २. १३४. २
अहेरे १. १८७. ३
अहो १. १२८. २; ३. ६. १;—भाग्य ५. ४३. ४; ४८; ६. २३. १
आई ६. १३०. १
आँखि १. ३१३. ४; ३२६. १; ३; २. २१. ३; १५५; १६३. ४; ६. ५५. ६; ७. १५७
आँखिन १. ३१३. ४
आँखिन्ह २. १६७. ३; २६३. ४
आँखी २. ३२. ३
आँत ६. ११३. २
आँधी ६. १०१. ४
आँसु २. १६६. २
आइ—आकर १. ५५. ४; ५९. ३; ९७; १२३; १९७. ३; २१२; २१३. ७; २३३. ३; ३०२. २; ३२०. २; ३७६; २. १०. १; ५४; १०४. २; १०७. ३; १३३; १३६. २; १३८. ३; २२८. १; २३१. ३; ३. २; ३६. ७; ४०; ४. २५. १; ५. २. १; २९. १; २९. २; ६. ११. ४; १९; ३९. ४; ५७. २; ६१; ७०; ७६; ८३; ८५. १; ११०. ४; १२२. १; ७. ५; २३; ३५. १
आइय १. २५१. १
आइहउँ २. १५२. ५
आइहि २. १४७. २; ३. ३३. ४; ५. २५. १
आईं १. २२५. १; ३८९. ४; २. २१४. ४; २२२. १
आई १. १०३. १; ११९. १; १२४. ३; १३१. २; १७३. ४; १८७. ३; २००. १; २०१. ३; २२२. १; २२७. २; २३३. २; २३६. २; २४४. २; २४५. १; २६१. १; ४; २६४. १; ३०२. ३; ३१६. २; ३२३. २; ४; २. २. २; १३. ४; २०. १; २९. २; ४०. १; ५८. २; १३६. १; १४०. ३; १४३. ३; १५६. २; १६०. २; १६४. १; १६५. १; २३१. ४; २६३. ४; २६७. १; ३. २२. ९; ४८. ५; ५३. ४; ४. ७. ४; ८. ४; ९. २; १४. ४; १४; १९. १; २१. १; ३३. ६; ५. २.

54712

२८. १; २; २९. ३; ४; ३४. ४; ४४. १; ५४. १; ५६. २; ४; ६. ६. ५; ८. २; ६१. २; ६८. २; ७०. ५; ८४. ५; ८७. २; ९९. १; १०२. ६; ७; ११०. ३; ११४. ३; ४; १२१. २; ५; भालु—१२३. १; २; १४४. ३; १५०. १; १५६; ७. १२. १; ३३; ९४. १; ९६. २

कपिबृंदा—बंदरों का समूह ५. ३४. ३

कपिराइ—बंदरों का राजा ५. ५

कपिराई ४. २९. १

कपिल—पीला रंग, सांख्य-दर्शन-कर्ता मुनि १. १७०. ३

कपिलहि ७. ६२. १

कपिला ३. ३७. ४

कपिहि ५. १२. ६; १९. १; २०. २; २०; ३२. ४; ६. ४९; ८०; ७. ९३

कपीस—बंदरों का स्वामी ४. २३. १; ३; ५. ४४. २; ३; ५२. ३; ५४. १

कपीसा ४. ९. ७; ५. २९. २; ४५. ३

कपूत १. २९९. १; ४. १७

कपोत—कबूतर ३. ३९. ५

कपोल—गाल १. १७५. १; कल—२७६. २; ७. ११३. २

कपोला १. २३१. ५; २६६. ३

कफ ७. २०८. १५

कब १. ८३. १; २. १२. ३

कबन ७. ७९. ३

कबनि १. २१५

कबंध—धड़, राहु, बिना सिर का शरीर, दैत्य-विशेष ३. ४२. ३; ६. ५५; ११५. ३; ७. ९२. ४

कबहिँ २. ५३. ४

कबहुँ—कभी १. ११. १; १०३; १७९. २; २३०. ४; २३२. ४; ३०४. ४; ३०९. ४; २. १५. ४; २८; ४९; ५०. ४; ८३. ३; १२५. १; १३२; २१०; २३२; २६१. ४; ३. ६; १६. १२; ३५. ६; ५४. २; ४. १७; १८; ३०. २; ५. ७. १; ९. ४; १४. ३; २२. ५; ६. ३०. २; ७३. २; ७४. ४; ९९. ६; ७. ७. ८; ९; ४८. १; ६७. २; ७२. ३; ७२; ८१. २; ८६. ४; १०४. ४; १३८. १; १४०. ३; १५०. ३; १८८. १; ३; १९०. ७

कबहुँक १. २३२. ४; २५५. ४; ३. १५. ६; ४. १२. ४; १८; ६. ७४. ४; ९९. ६; ७. ६७. ३

कबहु ६. ५२. ३

कबहूँ १. ७२. ४; १५५. ४; २३४; २. २१०. १; २६१. ३; ७. ६१. ४; १३४. १; २२१. ३

कबारू—कारबार, हुनर २. १०१. ४

कबि १. १८. ४; १९. २; ३; २१. २; ३; २२. ५; २४. १; ३; ४;—कोविद २६; आदि—३५. ३; सु—५२. ६; ५७. १; ६०. ५; ६४; १२४. ३; १२९. ३; २६३. ४; २७५. ४; ३२२. २; ३३०;—कुल ३९५. ४; ५; २. १३. ४; ४८. ४; ५९. ३; १११.

कमलनि, कर—२. ११६. ४; २४०. ४
कमलन्ह ६. १२३. १
कमलन्हि, करनिकर—६. ३२
कमला,—लक्ष्मी—पति १. १६४. १
कमान २. ४२. १
कंप—काँपना, कँपकपी १. ७८. ३; २२३. ३; २४०. १; २. ७१. १; ६. २०. १; ११६. ५
कंपति—काँप गया ६. ११६. छं. ५; १२८. ५
कंपित—कँपाया गया १. ११९. ३;—गात ६. १०;—गाता १२०. २; ७. १७२
कंपहि—१. ३२६. २; ५. ३७. २
कंपेउ १. १११. ३
कंबु—शंख १. २३१. ४;—कल २६६. ४; २७६. ४
कर,—किरण, हाथ, सूँड, महसूल रवि—निकर १. ५; ८; १७. २; ३०;—तलगत ४९. ४; दिनकर—५२. ५; राकेस—सरिस ५३; ५५. १; ५६. ३; ५९; रवि—भवचारी ६४. ४; ६५;—गत ६७. ४; ६८. १; ४; मनुज—७२. १; ७५; ७७. १; ७९. ४; ८३. ४; ८७. २; ९१. २; ३; ९९. ३; १००. २; १०२; १०३. १; १०४; १०५. ३; १०८. २; ५; १११. ५; १११; ११३. २; ११४. ४; ११५. १; ११६. ३; ११७. ४; ५; ११९. ४; ५; १२१. १; १२२. ४; १२२; १२३; १२५. ३; ५; १२७. १; ५; १२८. ३; १३०. ३; १३३. ३; ४; १३३; १३७. १; २; १३९. ४; भ्रमतमरवि—१३९; १४१. ३; १४१; १४२. ३; ससि—१४४. १; १४८; १५१. २; १५७. ३;—सरोज १६२; करि—सरिस १७५. ४; विधु—निकर-विनिंदक १७५. १; निज—कंजा १७६. ४; १७८. २; १८०; १८४. २; १८६. २; १९०; १९२. ४; २०३. २; २११. ३; २१२. ४; २१३. १; २; २१५. १; २१७; दिन—बंस-उदारा २१९. १; २२१. ३; २२२. १; २२४. २; २२५. ३; २२७; २२९. १; ४; २३१; २३२. २; २३२; २३४; २३६. १; २४४. १; स्व—२४६. १; २५४. ४; २५५; २६१; २६४. ३; कामकलभ—२६६. ४; वाम—२६६. ४; २६७. १; २६८. २; २७५. १; २७६. ३; २७७. १; २८२; चाप—२८४. २; २८६; राज-कुअँर—२८९. २; २८९; २९२. १; २९३. २; ३; २९४. ५; २९७. ३;—सरोज २९७. १; ३०१. ४; ३०३. ४; ३०८. १; ३१०; ३१४. १; ३; ४; ३१७. ४; ३१९. २; ३२०; ३२३. ३; ३२५. २; ३६८. १; ३; ३६९. ५; ३७०. २; ३७३. ४; ३७५. ३;—कमल ३७९; २. ३. ३; ५. ३. ६; १०. २; १५. १; दिन—दुन्दीनि

१९२. ३; १९३. ३; २३४. १; ३९१. ३;—बस २. १३. २; २५. ३; ७८. ४; ९३. २;—गति १००. ४; १०८; ११९. ४;—वचनमन १३२. ४;—मनबानी १४०. ४; १४६. १;—बस १४६. १; १५१. ३; १५३. २; १६६. ३; १६८. ४; १७३; २२०. २; २५५. ३; २५६. ३; ३१७. ४; ३. ४. ३; २१; —फलदाता ७. ६४. ३; १५०. ४; ५; १६४. १; १९२. ३

करमु १. १२७. ५; २. २१. ३; ७८. ४; ९२. ४; ९३. ३

करवट २. ४४

करवरे—विघ्न १. ३९१. १

करवाई १. १२५. १

करवाउब १. १०७. ३

करवाये १. १७१. ४

करवाल—तलवार ६. १२६. १

करवावहिँ १. २१६. १

करवावा १. २३९. २

करष—द्वेष ५. ३६. ३; ६. २७. २

करषहिँ—खींचती हैं १. ३८०. १

करषि—खींचकर १. १६५

करषी २. १०२. ३

करसि १. ३०५; ३१३; ३१४. १; २. १६; ३३. ४; ३७; ५४; ३. २८. ४; ३४. १; ३७. ५; ४. ३१. ५; ५. ५८. ३; ६. ४०

करहिँ १. १३. २; २०; २२; २३. ४; २४; ५४. २; ५५. ४; ६९. ४; ८५. २; ८६. २; ९०. १; ९३; ९४. १; ९७. २; १००. १; १०९. १; ११३. २; ११५; ११६. १; १२३. ५; १२७. ३; १२९. ३; १३१. ४; १३२. ३; १४८. ४; १५१; १५४. ३; १६२. २; १६६. ४; १६८. २; १७२. १; १९३. २; २१२. ३; २१३. ७; २१५. २; ३; २१५; २१७. १; २२३. ४; २३७. ३; ४; २३८. २; २४३. ३; २७२. १; २७९. ४; २८२. १; २९५; २९८. ३; ३०७; ३१०; ३१९. १; ३६८; ३७२; ३७४. ३; ३७५. १; ३७९. ४; ३८१. ३; ४; ३८१; ३८२. १; ३; ३८४; ३८९. १; ३९२. १; २. ३. २; ४. २; ६. ३; १६. ३; ४९; ७१; ८०. ३; ८५. ४; १११. १; ११४. ४; ११४; १३०. २; ४; १३३. ४; १३५; १३६. ३; १३९. ३; १४२. १; १५७. २; ३; १५८. ३; ४; २०२. ५; २०३. २; २०५. ४; २१४. ४; २२०. ३; २२२. ४; २२५. १; २२६. ४; २६१. १; ३. ९; १२. ३; १४. २; २१; २२. ७; २६. ३; ८; ३०. ५; ४८; ५९. ३; ४. १४. १; १५. २; १९. ३; ३३; ५. ७. ३; ४; १७. २; २५. ३; ३१. ३; ३६. १; ३८. १; ६. ५; ६. ३; १०. ३;

१३. ५; २७. ५; ६१. ३; ६४. १; ६६; ६७. ४; ८७. ३; ९३. ५; ९८. ७; ९९. १; १०६. ५; ११०. २; ११२. ४; ११५. ६; १२३. २; १२५. ७; १२६. १; १३०. २; १४९; ७. १०; २०. ३; ४; ४४. १; ४६. २; ४८. २; ४९. ४; ५२. १; ५३; ६३. ३; ६४. २; ६५. १; ६५; ८६; ९९; १०८. ४; ११३. ५; १५६; १५८. ५; १५८; १६१; १७०. ७; १८९; २०२. ५; २०८. १६

करहि १. ९७. १; ३; ३१४. २; २. १५१. १; २५८. २; ३. ६०; ५. १२. २; ६; ६. ११५. १; ७. १७८. ६; २२१

करहिँगे ४. १४; ६. २९

करहीँ १. २४. ४; ९३. ३; १२५. २; १४३. २; १६८. १; १९७. ४; २२६. ३; २३७. २; २३८. २; २८३. ४; २९८. २; ३१०. २; ३३०. ३; ३८३. २; २. ४. ३; १२. ४; ५९. ३; ९२. १; ११७. ३; १२५. ४; १३०. १; १४२. २; २०१. ४; ३. २४. ५; ५२. ५; ५. ३५. ५; ६. १०२. ५; १२०. ४; १५०. ५; ७. १७. ३; २०. ३; ४९. २; १०६. ५; ११०. १; १६४. १; १७२. ३; १९४. १; २०८. १४; २२२. ३

करही २. २१०. २; ६. ४५. १; ७. १८८. ७

करहु १. १६; १७. २; २५; ३२. ४; ३४. ३; ४१. २; ९५. ३; १०२. २; १०७. १; ११३. १; २; १३३. ३; १६०. ३; ४; १६५. १; १६७. २; १७४. ३; १९३. १; १९५. २; २१२. ४; २४३. १; २४३; २४९. २; २५१; २७९. ३; २९०. ३; ४; ३१०. १; ३११. २; ३१३. ४; ३१९; ३६५; २. ६. २; ६; ७. ४; ११. २; २०. ४; २२. ४; ३४. ३; ३८. २; ५०. ३; ५१. ४; ५८. २; ७२. १; ३; ७९. ४; ८०. ३; १२८. ३; ४; १३२. ४; १३३. २; १३४. १; १७०; १७३. १; १७५. ३; १७६. २; २०७; २११. १; २१३. ४; २२०. ४; २५५; २६४. ३; २६५. १; २६७. २; ३. १८. ९; १९. ४; ३२. १; ४६. ३; ४. ९. ११; १४. ५; २४. १; ४; २८. १; ३१. ५; ३२. २; ३३. ६; ५. ११. १; ३०. १; ३४. ३; ३६; ४१. २; ६. २; ४. ३; १२. ५; २०. ३; २२; २५; ५०. १; ५९. १; ९८. ४; १३१. ४; १३४. १; १४०. ४; ७. ६५. ३; ६६. २; १२७. ४; १७८. १; १८६. ५

करहू १. १३३. १; १६५. १; ३६८. ४; २. ३६. ४; १३३. ४; १६२.

१; ९. ३; १३; १४. ३; १६. ३; ४; १७. १; ३; १८. ४; २३. १; २३; २७. ३; २९. ४; ३२. २; ३; ३४. ३; ४; ४०. ३; ४३; ५१. ५; ५४; ५८. २; ६०. १; ६०; ८०; ८४. १; ८९. २; ९०. ३; ९५. २; ९५; ९६. १; ३; ९९. ४; १०२; १०४. १; १०५. २; ४; १०७. २; १०८. १; ४; ११०. ३; ११०; १११. २; ११३. ४; ११८. ३; १२१. ४; १२६. १; १२९. ३; १३०. २; १३०; १३३. २; १३५. २; ४; १३७. ३; १३९. १; १४८. १; १५१; १५२. ५; १५३. ३; १५४. ४; १५७. १; १६१. २; १६७. १; २०१. ४; २०२. ३; २०३. २; २०३; २०६. १; २०८. ३; २११; २१२. ४; २१३; २१४; २१७. १; २१९. २; २२०. २; २२१. ४; २२२. १; २२५. ३; २२९. ३; —**निकर** २३१. ३; २३२. २; २३७. २; २५१. २; २५४; २५५. ४; २५८. ३; २६३. २; २६५; २६६. २; २६७; २९८; ३१५. ४; ३१७. २; ३१७; ३१९; ३२०. ४; ३२१. १; २; ३२२. ४; ३२४. २; ३; ३२५. १; ३२७; ३. ४. ३; ४; ५. ४; ६; १२. १; १५; **निहिचर—वरूथमृगराजः** १६. ३; १७. ३; ६; २३. ३; २५; २६. ६; १०; ११; २६; २७; २८. ३; २८; ३०; ३२; ३४. ५; ३५. ३; ७; ३७. ९; ११; ४१. ४; ५; ४५. २; —**वरगामिनि** ४५. ५; ८; ४६. ४; ५३. २; ३; ५३; ४. ६. ३; ६; १०; १२. ४; ५; १२; १३. ५; २१. २; २२. ३; २३. २; ३; २३; २६. ६; २७. ४; ३०. ६; ३१. १; २; ३; ३३. ४; ५. २. २; ३. १; ९; ५. २; ३; ६. ३; ८. ३; —**करसम** १०. २; ११; २१; २२. १; २४. ४; ५; २५; २८; ३२. ४; ३३. २; ३४. १; ३५. १; ३७. १; ४; ४६. १; ५४. २; ५६. १; ६०. ५; ६. ४. ५; ५. ३; ९. १; १०. १; १२. ४; १९; २७. ४; २९. ४; ३२; ३९. १; ४५. ३; ४५; ४८. ४; ५२. ४; ६; —**वरूथ** ५६. २; ५९. २; ३; ५; ६२. ४; ५; ६४. ३; ६४; ६६. १; २; ४; ६८. १; ७०. १; ७१; ७५. १; ७८. ४; —**वर** ८३. ५; ८४. ३; ८६. १; ८७; ८८. ५; ९१. १; २; ९१; ९२; ९३. ५; ९४; ९६. २; ९९. ५; ८; १००. ३; ४; १०२; १०५; १०६; १०८. २; १०९; ११४. ४; ११५. १; ११६. ४; ११८. १; ४; १२०. ३; १२२. १; १२३. ६; १२४. ६; १२६. १; ३; १२९. १;

१; २२३. १; ३; २२५. ४; २३२. २; २३४; २५१. ३; २५७. ४; २५९. १; २६०. ४; २६६. ३; ३. ४०. ४; ४६. ३; ४९; ५७. ४; ४. ९. ८; २९. १; ३०. १; ५. ३४. ३; ५०. १; ५७. ४; ६. १०. २; ११. ४; १२. १; ३; ५; ३०; ६५. १; १००. ४; ११३. २; ११५. १; १५३. २; ७. २२. ४; ४०. २; ४५. ३; ५६; ९८. ३; १०६. ३; १४८; १५४. २; १५६; १५८. ५; १७०. ८; १८२. ६; १९४. ५; ७; २२२. ३; २२३. ६

कहहि २. ४६. २; ५. ५२

कहहीं १. २१. १; १४३. २; २५१. ३; २५६. २; ३७३. २; २. ८. ३; ४९. ३; ७८. ३; ११०. १; १२०. १; १४२. १; १६८. ४; १७०. २; २११. २; २१८. ३; २२५. ३; २५३. ४; २६६. २; ३. ७. ६; ५. ४१. ३; ६. १२. ४; २३. १; २७. ४; ७. २०. ५; ४८. १

कहहुँ १. ३७५. २

कहहु १. २२. ६; ६८; ६९. १; ७८; ८०. ४; ९०; १०२; १०३. ४; ११२. ४; १३३. १; ४; १३४. २; ३; ४; १३४; १३५. १; २; १४४. ४; १५१. ४; १५८; १८९. २; १९२. १; ४; १९५; १९६. ३; १९६; २१७. ३; २३९. ४; २४९. १; २; २५४. १; २८५. १; ३०२; ३१५. ३; ३१६. ४; ३२३; ३२४. २; ३; ४; ३७८. २; २. ७. ४; २२. २; २८; ३१. २; ५०. ३; ५३. ४; ५७. ४; ९०. १; ११२. ४; ११८. १; १२७. ४; १२८. ३; ४; १५८. १; १७४; २५६. १; २५७; २६०; २६५. ४; २६५; ३. १०. ५; १९. ४; १९; ५८. १; ३; ४. ४. २; ७; ३३. ६; ५. ६. ३; ७. ४; ३०. ४; ६२; ६. ११. ५; १६. २; २५. १; ५७. ४; ६५. ३; ६८. २; १३३. ३; १५०. ४; ७. ३०. ६; ३८. ३; ४; ५१. ४; ५९. २; ६०. ३; ६९. १; २; ७५. ४; ७८. ४; ७८; ७९. १; ३; ११५. ३; १४५; १४६. २; १४६; १४७; १८५; १८६. ४; १९४. ४; ६; २०८. १; २; ३; ४

कहहू १. १०२. २; १४४. ३; ३०७. ४; २. ४४. २; ३; १०१. ४; ५. ३७. ४. ६. ५६. ३

कहाँ १. ४२. ४; ७६. ४; २१७. ३; २८०. २; ३१५. ३; ३२३. ४; ३७१. १; २. १२१. २; १२२. ४; १५६. १; १६०. ४; ३. १५. ६; ५. १; ६. १; १९. १; ५८. ४; ६. २८. १; ५५. ३; ७१. २; ७६. ३; ८३. ३; ९५. ४; १२९. २; ७. ७. ४; ३६. १; ३८. २; १४६. २

कहा १. ५४. १; ६९. ४; ७७. १; ७९.

जुवा—युवक, जवान १. १८७. २

जुवान १. २७३. ३

जूझइ ६. ९५. ५

जूझा—लड़ा ६. ११. ४

जूझे १. २०५. ३

जूट,—समूह जटा—३. २३. ८; ६. १११. ४

जूठनि ७. ११०

जूडी—शीत-ज्वर ७. ६३. १

जूथ—समूह १. ३१९. १; ३३०. १; ३७८. ३; बानर—४. २४; २५. ३; निसिचर—५. ३. ७; ३४; मत्तगज—६. २८; बानर—९६; गज—१०२. २; लोभमोहमृग—किरातहिँ ७. ५३. ३

जूथा, भवभंजनरंजनसुर—३. १६. ५

जूथप—सेनापति ५. ३४; ५७. २; कपि—भीरा ६. ८. १; ५९. ३; १५१

जूथा १. २१२. ३; सुर—२२३. ३; कज्जलगिरि—३. २३. २; पदचर—४८. ५; बानर—५. ५०. १; ६. ४. ५; कपि—६२. १; मालुबलीमुख—९२. १

जून—पुराना १. ३०५. १

जूरी—इकट्ठा करके, सरदी २. २५१. १

जूह,—(यूथ) समूह गिरितरु—६. ८८

जूहा, बानर—४. २२. २

जेवँत १. १२३. ४; ५

जे १. ८. २; १०. १; २; १७. ५; ६; ७; २२. १; ४; २३; २४. ३; ३१. ५; ३४. १; २; ३; ३८; ५४. २; ५९. १; २; ६६. ४; ७२; ८४; ९१. ४; ९३. २; १०३. २; १०८; १०९. ५; १०९; १२७. ५; १३२. ३; १३७. २; १३८; १४३. २; १५३. ४; १८३. ३; १८४. १; १९०. १; २१६. १; २२४. ४; २३७. २; २६२. २; २७८. ३; ३०६. २; ३२०. ४; ३२५. ३; ३७२. १; ३८७. ४; ३९१. ४; ३९५. ५; ३९५; २. ४. १; ३; ५०. २; १११. २; ११४. १; ३; १२१. ४; १२२. ३; १२३. १; १३१. ४; १६८. ३; ४; १६८; १६९. २; ३; १७५. २१०; २१५. ४; २१८. १; २२५. ४; २६०; ३; ३१८. ४; ३. १; २. १; ७. २; १०; १६. १०; ४१. ३; ५; ५६. २; ५८. २; ५९. ५; ५९; ४. ९. १; २०. १; २८; ३३; ५. ३. १; १५. २; ४३. ३; ४; ४४; ५२. १; ६. ६. १; ६; ७. ३; १२. ४; ५; १४; ६५. १; ६८. २; ९३; ९६. १; १०१. १; ११५. २; १३१. १; १३२. १; १३८. ५; १४१. १; १५१; १५७. ७; १५७; ७. २७. ६; ३०. २; ३; ४; ६; ३२. ५; ३४. २; ५०; ५१. ५; ५४; ६४. २; ३; ६५; ७७. १; १००. ३; १२७. १; १५४; १५५;

२; ९२; ९७. ४; ९८. १; ९९. २; १०२. १; २; १०४. २; १०५. ३; १०९. २; ११४. ४; १२०. २; १२३. २; ४; १२६. ४; १२८. २; १३२. २; १४२. १; १४४. ४; १५२. ५; १५२; १५३. ३; १५६. ३; १६३. ३; १६५. ३; १७२. ३; १७३. २; १७४. १; १७५. २; १७६. २; २०२. १; ३; ५; २०८. २; २१०. ४; २१५. २; २२३. ४; २२५. ३; २३२. ४; २५६. ४; २५९. ३; ३१४; ३. १०. ४; १८. १; २; ६; १९. ४; २०. १; ३३. १; ३३; ३८; ४१. ४; ४. २; ७. ४; ९. १०; १२. ५; २१. ३; २३. ५; २४. ३; ४; २५. २; ५. १. ४; २. ६; ८. २; १३. ४; २१. ४; २६. ४; ३४. २; ३८; ३९. ४; ४२. २; ५६. ४; ६२. २; ६२; ६३. २; ६. ९. ४; १०. ३; १२. ३; २७. ४; ५; ३३. ३; ४०. १; ४१. २; ४३; ५०; ५६. १; २; ४; ६८; ६९; ७१. ४; ७७. २; ७८. ४; ८०. ३; ८४. २; ५; ९३. ७; ९४. २; ९८. ५; १०३. २; १०६. ५; १२४. ३; ४; १३०. ८; १३८. ५; १४०. ४; १४८; ७. ३०. ५; ४७. ४; ६६. ४; ८२. १; ८३. ३; ८४. २; ८५. ३; ८९; ९०. १; ९१; ९२. ३; ४; ९४. १; ४; ९४; ९६. ३; १०२. ३; १०६. २; १०८. १; १२३. २; १२७; १३१. ४; १३४; १४८. ४; १७०. ५; १७७; १८२. ८; १८८. ४; १९१; १९२. ८; २०८. १४; २२०

जेहीँ १. २०५. १; २. ५०. १; १५७. ४

जेही १. १०. ५; ६०. ३; १०४. ४; २८०. ३; २. २१५. ४; २१९. ४; ३. १७. ४; ७. ९८. ४; १००. ४; १६६. ४; २०८. ५

जैसा ३. १५. ८; ४४. ३; ४. २०. १; ५. २६. ३; ६. ९. ३; २८. २

जैसी १. २१. १; १०२. १; २७४. २; २९७. १; ३२२. ३; २. १२४. १; २३५. ४; ३. १२. २; ४. १७. ३

जैसे १. ८. ६; ६९. १; ७५. २; ९४. १; १३१. १; १४०. २; २७५. १; २८४. १; २; २९२. १; ४; २९६. ३; ४; ३११. ४; ३२६. २; ३६८. ३; २. २३. १; ३८. ४; ४४. ४; ७२. ४; १४३. १; १४८. ४; २०५. १; ३. ८. १; १५. १०; ५०; ४. १६. २; ५. १३. ६; २७. १; ४९. ४; ५६. १; ६. १३. ३; ६५. ४; ७५. १; १११. २; ११६. ३; ७. १२७. ३

जैसेहिँ ७. ९. ४

जैहउँ–जाऊँगा ६. ८१; ८३. ६

जैहहिँ ४. २९. ५; ५. १६. ३

जैहौं ६. १४६
जोंक २. ४३
जो १. ६. ४; ७. ३; ४; ११. ५; २४. ४; २४; ३१; ३३. ४; ४२; ४९. १; ५७. ३; ७३; ७५. ४; ७८. १; ७९. २; ८३. १; २; ८६. ४; ८७. ३; ८८. २; ९२; १०७. १; १०८. १; ११९. ५; १२०. ५; १२१. ३; ५; १२२. ५; १२३. ५; १३१. ३; १३४; १३५. २; १३७. ३; ४; १३८. ४; १४०. २; १४१. २; १४४. ३; १५९. २; १५९; १६९. २; ३; १७०. ३; १७४. २; ३; १७८. २; ४; १७९. १; १८१. १; ३; १९०. ३; १९४. ३; २०६. २; ३; २१५. १; ५; २१५; २१८. १; ३; २२०. १; ३; २२१. ४; २२८. ४; २२९. २; ३; २३४. १; २; २४४. ३; ४; २४९. १; २५४. १; ३; २५५. १; २६०; २६६. ३; २८४. ४; २९४. १; २९४; ३०४. २; ३०६. ३; ३०६; ३१७. ३; ३१९. ३; ३२२. ४; ३६६; ३७४. ४; ३७६. २; ३८६. १; २. १; ३. ३; ७. २; ८. १; १५. २; १७. ३; ३१. २; ४; ४१. ४; ४२. ४; ४४. २; ४७. ४; ४९. २; ५४. १; ५७. ३; ७८. ४; ७९. ४; ८०. ३; ८२. ४; १०४. ४; ११०; ११३. ४; १२५. १; १२७. ५; १२८. ४; १३३. ३; १३८. १; १४४. ४; १६३. ४; १६६. ४; १७०. ३; १७०; १७३. २; ३; ४; १७३; १७४. २; १७८. ३; २०८. ३; २१९. ३; २२०. २; २२४. १; ३; २३२. ४; २३४; २५६. ४; २५९. २; ४; २६५. ४; ३२७; ३. ३. ४; ७. ३; १६. १०; १६. १२; १६. १४; २१. २; २२. ७; ९; २६. २; ३२. ३; ४१. ५; ४२. १; ४२; ४५. ५; ५४. २; ४. ९. १२; १०. २; १२. ५; २४. २; २५. १; ४; २६. ४; ३२. १; ३३. ३; ७; ५. ३. ५; ४; ७. ४; १६. १; २१. ४; २२. ५; २६. २; ३०. ३; ३८. ३; ४१. १; ४२. ४; ५१; ५४. ३; ५७. २; ६२. ४; ६. ६. १; २; १०. २; ४; ३३. ५; ३४; ३८; ३९. १; ४; ४१; ४३. २; ४८. १; ६२. ४; ६५. २; ८५. ३; ८८. १; ९५. २; १०१. ३; १०६. ६; १०८. ४; ११३. ६; १२४. ५; १२५. ७; १२६. ६; १३०; १३५. ६; १४१. ५; ७. ७. ९; ९. ४; १२. ४; १४. ६; ५०. ३; ५९. २; ६२. ३; ६७; ६८. ४; ७५. ३; ७७. २; ४; ७९. ४; ८१. ३; ५; ८३. २; ३; ४; ८५. ३; ९६. ४; ९८. २; १०४. १; १०५; ११९; १२७. १; १२७; १२९. २; १३२. ४; १५०. १; १५४. २; ३; ४;

५; १२१. ४; १२८; १३२. ४; १३५. ३; १३६. ३; ४; १३८. ४; १४४. १; १६३; १६४; १६५. १; ४; १६७. ३; १६९. २; १६९; १७७. ४; १७८. ३; १७९. ४; १८७. २; १८७; १९० १; २; १९२. २; १९६; १९८. ३; २०१. २; २०७. ३; २४०. ५; २४३. १; २५१. ४; ३०७. २; ३; ४; ३०८. १; ३१०. २; ३१२. १; ३१५. २; ४; ३१९; ३२४. २; ३; ३२४; ३२७. २; ३; ४; ३७५. २; २. १०; १३. २; १८. २; ३; १९. ३; २०. १; २; ३; २२. २; ३१. २; ३४. ४; ३६. २; ४१. ३; ४४. २; ३; ४५. ४; ४५; ५०. ४; ५५. ३; ५६; ५७. ३; ४; ५८. १; ७२; ७३. ३; ७६. ४; ७८. ३; ७९. ४; ८०. २; ८१; ८२. ४; ८३. १; ९६. १; ९७. १; ९८. ४; १०४. ४; १८९. २; ११०. १; ११८; १२६. ४; १२७. ४; ५; १२८. १; ४; १२९. ३; १३०. ४; १३१. ४; १३१; १३२; १४४. १; १५१. २; १५५. ३; १५६. ४; १६९; १७०. १; २; १७४; १७५. २; ३; १७६. १; ४; १७७. २; १७८. ३; २०२. ४; ५; २०६. ४; २०७; २०९. ३; ४; २११. १; ३; २१२. २; २२१. १; २२८. ४; २३२. ३; २३४. १; २५१. ३; २५२. १; २५७. २; २५७; २५९. ३; २६४. ४; ३१६. ४; ३२४. ४; ३. १०. ५; १४. ४; १७. २; १८. १; ५; २०. २; २२. ४; २४. ४; ५; ३२. १; ३३. १; ३९. ५; ४०. ५; ४६. ३; ५४. २; ४. ३. ४; ५; ३; ४. ४; ९. १०; १०. ३; १३. ३; १४. ५; २४. ३; ४; २६. ६; ३१; ३२. २; ३३. १; ३; ६; ५. १. १; २; ६. ४; ७. ३; १३. ५; १४. ५; १७. ५; २१. ४; २२. ४; २३. १; ४२. ४; ४४. ४; ४७. ४; ४८. ३; ४९. ४; ५०. १; ५३. १; ६०. ३; ६. १०. १; २९. ३; ३०. ३; ३०; ३१. ४; ३३. २; ५२. २; ५५. २; ७; ५७. ४; ६८. ४; ७९. २; ८३. ७; ९८. ४; १००. २; १०९. ३; ११५. ३; १२२. ३; १३२. १; १३३. १; १३४. १; १३५. १; १३७. ३; १४७; १५०. ३; ४; १५७. १; ७. ४. ७; ७; ९. ४; १३; १८; ३५. २; ३; ३८. २; ४०. ५; ४३. २; ५९. ४; ६०. १; २; ७०. २; ३; ७७. ४; ७९. १; ८०. २; ८५. ४; ८९; ९६. ४; ९८. ३; १००. १; २; ३; १०८. २; १२७. ४; १४६. १; १५७; १७८. ८; १८५; १९०; १९१; १९२. २; १९४. ५; १९६. २; २०८. ३; ४; २१३. २; २१७. २; ३; २२३

तुम्हहुँ ७. ३८. ३

तुम्हउ १. ८६. १

५; ७. ७१. २; ८०. १

तुम्हारि १. ६९. २; ९०; ९१. १; १५७. २; २. १८. ४; ७५. १; १२९. २; ३१६. १; ५. २२. १; ४७. ३; ६. १३०. ५

तुम्हारिहि १. ७९. १; ६. ५६. ४; ७. १४. २

तुम्हारिही ७. ५९

तुम्हारी १. २४. ६; ९१. ४; ९४. ३; १०१. २; १३१. ४; १२४. १; १४४. १; १६५. ४; १६९. ३; २६९. ४; ३९१. १; ३९४. ३; २. २२. ४; ८३. ३; १२८. ३; १३१; २; ३. १८. ३; ४४. १; ६. १३२. ५; ७. १९२. ८

तुम्हारे १. १७७. १; १८०. १; १९६. ४; २६९. १; २७०. २; २७२. २; ३०६. ४; ३०८. ४; ३१५. ४; ३२५. १; ३९१. ४; २. १५. ३; २०. २; ३१. २; ४९. ४; ५१. ३; ५५. ३; ९७. १; ११३. २; ११८. १; १२७. १; १२८. ४; १३१. ४; १५२. ४; १७०. १; ५. २२. ३; ४८. ३; ६३. १; ६. १३२. ५

तुम्हारेहि २. २५९. १; ४. ५. १

तुम्हारो ६. १३२. ५

तुरग—घोड़ा १. १२५. ४; १८६. ४; १८९. १; १९९. ४; २२८. ४; २. ७; ६. ७२. २; ११२. २; ६; ११४. २; ११७. ३; ७. ७३. २

तुरंग—घोड़ा २. १४४; ६. १२०. १

तुरगा ६. ११७. १

तुरत—तुरंत १. ७२. २; ८८. १; ४; ९६. ३; १०२. १; ११०. २; ३; १२७. १; १६१. २; १६६. ३; १७६. ४; १८५. १; २०२; २१९. ४; २२१. १; २५१. ३; २७२. ५; २७३. ४; ३०९. २; ३६६. ३; २. ७६; ८०. ४; ८६; ११५. १; १४८. १; ३. ४. १; १७. ३; ५; २४. ३; ७; ३६. १; ४. ३. ३; ७. ३; १३; ५. २. ४; ३४. ४; ४०; ४३. १; ४७. १; ५०. ४; ५४. ४; ५५. १; ६. ६३. ४; ७२. १; ८४. १; ९८. १; ९९. ६; १०९. ५; ११४. १; ११७. २; ११९. १; १३२. ३; १५७. २; ७. २२; २४. २; २४; २७. १; ११९. १; १८८

तुरंत ४. २५; ६. ८१; ९८

तुरंता ५. १. ४; २५. ४; ६. ७५. २; ७६. ४; ८७. ४; ७. ४०. ५

तुरतहिँ ३. १२. ४; १८. ९; ५. ३. २; ६. १३४. ३

तुरतहि १. ११३. ४; ५. ६३. ३

तुराई २. १५. ३; ९२. १

तुरित १. १२१; ६. २८. १; ७. ८

तुरीय ७. २००

तुरीयं—चौथा ३. ६. ५; ७. १७४. २

६; ६४. ३; ७७. ४; ८७. ४; ८९. ४; ९१. २; ९९. ४; १०४. ३; १११; १३६; १४१. ३; ४; १४९. १; ३; १५६; १५७; १७०. १; १७२. ३; १७३. ४; १८६. ४; १९०. २; १९२. १; १९३. १; २; १९६. १; १९७. २; २०८. ४; २१६. ४; २१७. ३; ४; २२२. ३; २२६. १; २२९. ३; ४; २३०. २; २३६; २४०. २; २४२. ४; २४९. २; २५९; २६५; २७७; ३१४. ३; ३२३. ४; ३२४. ४; ३२५. २; ३२७. ३; ३९५. ३; ५; २. २. १; १६. ४; १७. ४; २२. ३; ३३. १; ४३. ४; ७६. १; ८१. ४; ८२. ४; १०१. ३; १०२. २; ११७. ४; १२३. ३; १२७. २; १३०. ४; १३१. ३; १३८. ३; १५३. १; १५८. ३; १६१. ४; १६३. १; १६३; १७०. १; २०४. ४; २२०; २२९; २५२. ४; २५४. ३; २५६. ३; २५७. ४; २५९. ४; २६१. २; ४; ३१७. ४; ३. ३. ४; ८. २; १४. १; १८. १; ७; १९. १; १९; २१. १; २२. ५; २६. २; ३; २८. ५; ६; ४०. ४; ४४. २; ४५. २; ४८. ६; ५४. ४; ५७; ५८. ३; ४. ४. ५; ५. ४; १०. ३; १२; १५. १; ३; १६; २४. ३; २७. ४; २८. १; ५. ६. २; १३. २; ३; १४. ५; १६; २१; २२. २; २६. १; ३३. ४; ३४. ४; ३६. १; ४६. १; ६. ६; १३. २; २०. ३; ४४. ४; ५२; ५३. ४; ६८. ४; ७०; ७३. १; ९३. २; ४; १०१. १; १०६. २; ११०. ४; १२३. ९; १२४. ७; १३०. ८; १३३. ३; १३४. ७; १३८. ५; १३९. ३; ७. ५. २; ७. ४; १२. ३; १४. ६; १८. ४; ३२. ७; ३५. ३; ५४. १; ६०; ६१. २; ७०. १; ७८. ४; ८२; ८६. ४; ५; १०८. २; ४; ११७. २; ११९. २; १३१. २; ३; ४; १३६. २; १४५; १४८. ४; १४९; १५०. २; १५०; १५७; १६०. ३; १६३; १७०. ५; १७०; १८२. ३; १८६. ८; १८८. ७; १९०. ६; १९२; १९६. ३; १९८. ३; २०६. ८; २०८. २; ६; १४; १५; २१०. २; १०; २१०; २११; २२३. ७

ते—वे, तेरेलिए, तेरा १. १७. ६; २२. ४; ३९. १; ४२; ४६. ४; ४६; ४९. ३; ५८. ४; ५; ६; ६०. ४; ६१. ४; ६२. ३; ६२; ६४. ४; ८६. २; ९३. २; १०८; १०९; १२०. ५; १२८. ३; १३०. १; १३७. २; १३९. २; ४; १६१; २०८. १; २१०. १; २१२. ३; २१६. २; २१९. २; २२४. ४; २३६. १; २३७. २; २५५. ४; २६४. ४; ३२६. ४; ३९१. ४; २. ४. ३;

तेजु १. २७२. २; २. १५७. २; २५७. ३

तेते १. ७८. १; २. १३९. ४; ३. ५९. ४; ५. ४५. ४; ६. १२१. १

तेपि—वे भी १. १०९. ४

तेरे ६. ४५. २

तेल २. १५८. १; तपत—५. १५. २; २४; ७. ११०

तेला ५. २५. ३

तेलि ७. १५८. ३

तेषां—उनका ७. १७४. ९

तेहिँ १. १९०. २; ६. ६२. ४; १२५. ५

तेहि १. ७. १; ११. ५; १२. १; २३. २; ५; ४९. ३; ५९. ३; ७०. ४; ७३. १; ७५; ७७; ८४. ३; ८६. २; ८८. ४; ८९. ३; ९४. १; १०३. ३; १०४; १०६. ३; १०८. ५; १०९; १११. १; ११४. ४; ११९. ५; १२०. ४; १२१; १२२. ५; १२७. २; ५; १३०. १; २; १४०. २; १४१. २; १५०. ४; १५०; १५१. ३; १५१; १५४. १; १५७. ४; १५७; १५८. १; ४; १५९. २; ४; १६०. २; १६३. १; १६९. ३; १७०. ४; १८०. ४; १८१. २; १८२. ४; १८६. ३; १८६; १८९. ३; १९२; १९९. १; ३; २००. ३; ४; २०२. १; २०३. १; २; ३; २०५. २; २०७. ३; २०७; २०८. ४; २११. ३; २१५. ५; २१७. २; २२०. ४; २२८. ४· २२९; २३०. १; २४२. ३; २४३. २; २४८. २; २५६. ४; २५७. २; २६१. १; २६३. २; २६५; २७४. १; २७५. ४; २८६. १; २९२. ३; २९४. ४; ३०१. १; ३१२. २; ३१७. २; ३२०. १; ३२१. २; ३२२. ४; ३२२; ३२५. ४; ३६७; ३७८. १; ३९५. ४; २. ८. १; ११; २२. १; २९. ४; ३३. ३; ३५. ४; ३८. ४; ४२; ५८; ८८. ४; १०६. १; १११. ४; ११३. ३; १२०. २; १२१. ३; १३२. २; ३; ४; १३५. १; १४१. ४; १४५; १४७. ३; १५३. ३; १५४. १; १६४. १; १६६. ४; १७५. १; १७७. ५; २०२. ५; २११. ३; २१३. २; ३; २१६; २२२. १; ३; २२३. ३; २२५; २२६. ३; २२६; २२७. ५; २३५. ४; २३६. २; २५४. ३; २५९. ४; २६५. ४; २९८. २; ३२२. ३; ३२५. ४; ३. ३. १; ४; ७. ३; ८. ३; १२. ४; १८. ८; २०. २; २१. २; २३. २; २४. ८; २६. ३; ३३. १; २; ३४. ४; ३५. १; ४०. १; ३; ४१; ४२. ३; ४८. ६; ५६. ४; ४. ६. २; ७. ३; ८. १; १०. ३; २१. ३; २२. १; २३. १; ४; २७. ३; २८. १; २; ४; ३०. ५; ३१. ३; ५. १; २. १; ४; ५; ३. ५; ६. २; ७. ४; ९. १; १८. २; ४; १९; २०. १; २२. ३; २३. १; २५; २६. ४; २९. ३; ३३. १; ३६. २; ३८. १;

४१. ४; ४५. २; ४५; ४६. १; ४८. ४; ४९. २; ५०. ५; ५४. ३; ५६. १; ४; ६०. ४; ६२. २; ६. १; ४. २; ११. ३; ४; १३. ४; १४. २; १६. ४; २७. ३; ३३; ३९. ३; ४०; ४६; ४८. १; ३; ५१; ५५. ३; ५५; ५६. ३; ४; ५७; ६२. ३; ६३. ४; ७०. २; ७१. ३; ७७. २; ७७; ७८. ४; ८०. ३; ८३. ८; ८४. ५; ८५. ३; ८६. २; ३; ८७. ४; ८८. ३; ४; ९२. ५; ९४. ३; ९५. २; ३; ९८. ५; ७; ९९. ४; १००. १; १०१. ५; १०३. ३; १०६. १; १०७. ४; १०८. ५; १०८; १०९. ५; ११२; ११९. ४; १२०. १; २; १२०; १२२. ३; १२३. ९; १२६. १; ३; ४; ५; १३०. १; १३४; १३९. १; ७. १५. ३; २६; ६८. ४; ७३; ७९. २; ८१. १; २; ५; ८५. १; ८५; ८६. ३; ५; ९२. १; ३; ११७. १; ३; १३४; १३८; १४८. ३; ४; १४९; १५९; १६७; १६८. २; ३; १७०. ५; ६; १७६; १८८. १; १९६. ३; ४; २००; २०२. ५; ८; २०६. ४; १०; २०८. १५; २२०. २

तेही १. १०. ५; ६०. ३; ७२. २; ३; ८८. ३; १०४. ४; १०४; १०८. १; १६२. ४; २०२. २; २८३. २; २९०. २; २९४. १; २. ११२. ३; १२३. ४; १४४. ४; १४७. २; २२५. ३; ३. ३७. १०; ५. १. ४; ५. ४; ६. १; ६०. ४; ६. ९३. ५; १२४. १; ७; १२५. १; १३५. ३; १५७. ६; ७. १७. १; ८८. ३; ९८. ४; १५०. २; १६६. ४

तैँ १. ११८. २; २०४. १; २१६. ५; २. १६२. ४; ४. ३. २; ५. ४; ३१. ४; ५; ५. १. ५; ४. ४; १०. १; १२. १; २१. १; ६. ११. १; २३. २; २९. १; ४४. ४; ४५. ४; ५२. ३; ८५. १; २; ८६. ४; ५; १०९. २; ११९. ३; ७. १२९. १; २; ४; १७८. ५; १८६. ३

तैसइ—वैसे ही ३. ३२. २

तैसी १. २१. १; १८८; २७४. २; ३२२. ३

तैसे १. ९४. १; ३२६. २; ३६८. ३; ५. ५६. १

तैसेहिँ ७. ९. ४

तैसेहि १. २१. २; २. २३१. ४

तो १. १३२; १७४. २; ३१२. ४; २. १६. १; ३. ४५. ४; ६. ३४; ७. ७. ६

तोतरि १. १७. १

तोतरे—तोतले १. २३१. ५

तोपेउ—ढक दिया ६. ११८. २

तोमर,—शस्त्र-विशेष सरचाप-सक्तिसूल-कमानपरिघपरसुधरा ३. २४. ८; २६. १०; ६. ६०. ४; ११२. ६

तोमर छंद ७. १६०. १

तोय,—जल—निधि ६. ८

तोर १. १९५. ३; १९६. २; १९९. ३;

नफीर–नफीरी, वाद्य-विशेष ६. १०२. ५

नफीरि ६. ३१. २

नबीना, सुरनारि–१. १५४. २; २. २३५. २; ७. १५६. ३

नबीने ६. ११७. ६

नभ,–आकाश, जलथल–बासी १. १७. १; सुकबिसरद–५२. ६;–गिरा ८०. ३;–जलथलचारी १०९. २; ११५. ४; १२५. ३; १२६. ५; १४१. २;–बानी १७३. ३; २०४. ३; २७९. ४;–मंडलसम २९४. ३; २९५. २; ३८०. १; ३८१. २; २. २१०. १; २२७. ५;–छाया ३. १२. ३; २२. ८;–मंडल २३. ५; २६. ६; ३७. १२; ४. १५. ४; १६. १; ५. ३. १; ३४. ४;–पथ ४२. ५; ५०. ५;–पंथ ६. ७; १६. २; ४;–सर ६२; ७२. २; ७३. १; ७४. ४; ७९. ४; ९३. ४; ९५. २; १००. १; १०६. १; ११२. ३; ११३. ४;–पथ ११७. १; ७;–मारग ११८. ४; १२०. ४; १२८. ४; ६; १३४; ७; १३५. ५; १४८. ३; ७. १९; २७. २; ५; १३८. २; १४०. ३;–सतकोटि १४०. ४;–गामी १४६. २;–बानी १७२. १; १७४; १७८. १;–गिरा १९२. ४; २१०. ८

नभग–पक्षी ७. ४४;–नाथ १००. १

नभचर–पक्षी आदि १. ८. २

नमत–झुकता है, प्रणाम करता है १. १३७. २; २१८. ४; ६. १२०. ८; ७. १४. ३; ३४. ५; ५३. ३

नमाम–हम प्रणाम करते हैं ७. ३०. १; २; ५

नमामि–मैं प्रणाम करता हूँ ३. ६. १; ३; ६; १३०. ८; १३८. २; ३; १४०. ५; १५७. ७; ७. ३२. ९; १६७. १; २१५. ४; २२३. ५

नमामी १. ३३. ५; १९०. ३; ७. २१५. ४

नमित–झुका हुआ २. ५९. १

नम्र ३. ५२; ७. १६८. ३

नय–नीति २. २५६. २; २६४. १; ५. ५८. १;–सीला ६. १३२. १

नयउ ६. ६६

नयन–आँख तरुनअरुनबारिज–१. ३; ७. १; सहस–१०. ६; राजिव–३४. ५;–ज्ञान ५८. १; ७२. ३; ७८. ३; ४; ९६. ३; १११. २; ३; ११६. २;–बिहीना ११७. ४; १२०. ४; १२१. ५; १२८. १; १३९. २; १४२. ४; मुनि–१६०. २; १७२. २;–पट १७६. ३; २१७;–बिलाना २२४. १; २३४. ३; २४२. १; २४४. १; २५१; २६१; २६२. १; २६३. २; २६५. ३; २६७. २; नीरज–२७६. १; २८५. ४; २९१. १; २९९; अरुन–

नहाये १. ६७. २; २४५. २; २६०. १; २. ११०; १३३; २०५. २; २३४. २; ३२३. ३; ७. २४. ४

नहारुहि—बाज़ या सिंह २. ३७. ४

नहावा २. ९५. २

नहाहीँ १. ६२. ३; ६७. १

नहाहू २. ५४. १

नहिँ—नहीं १. ८. १; १८. २; ४; ६; २२. ३; ५; २४. ४; ३७. २; ३८. ४; ४१. ४; ४३. ४; ४४. २; ४६. १; ४९; ५४. २; ५६. २; ५९; ६०. ३; ७२. १; ७५. ३; ७८. २; ८२. १; ८३. २; ८४. ४; ८६. १; ४; १०३; १०४. ४; १०९. ३; ११०. ३; ११४. ४; ११६. ४; ११७. २; ५; ११८. १; २; १२४. ५; १३४. १; १३५. २; १३६. ३; १३७. १; २; ३; १३८. ४; १३९. १; २; ४; १४०. १; २; ३; १४१. १; १४२. ४; १४८. ४; १५५; १५६. १; १५७. १; १५९. १; १६०. १; ३; १६१. २; १६४. ४; १६६. १; ३; १७३. २; १७६. १; १७७. ३; ४; १८४. ३; १८६. ४; १९५. ३; १९६. ३; ४; २०३; २०४. ४; २०८; २०५. ४; २०७. १; २११. २; ३; २१५. ४; ५; २१६. १; ३; २१८. ४; २२६. ४; २२८. १; २; २३१. ६; २३५. ३; २३६. १; २३८; २३९. २; २४०. १; ३; ५; २४४. १; २६४. ४; २६८. ४; २७५. ३; २७६. २; २८०. १; २८९. २; २९१. १; २९३. ४; २९९. २; ३०५. ३; ३०९. १; ३११. १; ३१२. १; ३१४; ३१६. ३; ३२१. १; ३९०; २. १२. १; १३. १; १४. ३; १९. २; ३; २०. २; २९. ३; ३०. ३; ३८. ४; ३९. ४; ४४. २; ४६. २; ४७. ४; ४९. १; २; ५१. ३; ५५; ५७; ६०. ३; ८३. १; ८५. ३; ८६. ३; ४; ८७. १; ८९; ९४. १; १००. १; २; ३; ४; १०१. ४; १०३. १; १०३; १०६. ३; १०८; १३०. २; १३१. १; १४३; १४५. १; ३; १६०. १; १६२. १; १६३. १; १६९. ३; १७२. १; १७३. ४; १७४. ३; १७५. ३; १७६. १; २०७; २१०. ३; २१२. २; २१३. ३; २१६. १; २१७. ३; ४; २२०. २; २२१. १; २२३. २; २३०. २; २३३. २; २५२. ३; २५३; २६४. ४; २६५. १; ३. ४. २; १०. ४; १५. ४; ६; १७. ६; २०. ३; २२. ७; २४. २; ३; ५; २८. ४; ३०; ३३. २; ३४. २; ३७. २; ४५. २; ८; ४६. २; ४; ५०. २; ५२. २; ५४. ३; ५६. ४; ५; ५९. १; ४. ४. ३; ५; ५. २; ८. ३; १०. ३; १६; १७. २; २४. ३; २५. २;

२९. ५; ३२. ४; ३३. ३; ५. २. ३; ३. ७; ७. २; ९. ४; ५; १२. १; १३. २; १५. ४; १६. १; २; १६; २१. १; २२. ५; २३. ४; २६. २; २७. ३; ३२. ३; ३३; ३८. ४; ४८. ४; ४९. ३; ४; ५०. २; ६. ५. २; ३०. ५; ३९. २; ४२; ४३. ४; ४४. २; ४४; ४५. २; ४६. १; ४८. ५; ५०. २; ५२. ७; ५५. १; ५; ७; ६६. ३; ७४. २; ७५. २; ७८. ४; ८०. २; ८३. १; ३; ८९. ३; १०३. २; १०८. ५; ११०. ५; ११५. ४; ११५; ११९. ५; १३०. २; ८; १३२; १३३. ५; १३५. ३; १३९. ३; १४०. ३; १४१. ३; १४९; १५०. ५; १५७. ६; ७. ५. १; २; ३; १४. ४; ५; २२. ४; ३२. ७; ३५. ४; ३६. ४; ४०. १; ४३; ४४. १; ३; ४; ४९; ५१; ६१. ४; ६४. १; ६६. २; ६८. २; ४; ६९. ४; ७१. ३; ७३. ४; ७६; ७९. ४; ८१. २; ३; ८४. ३; ८६. ५; ९८. २; ३; १००. ३; ४; १०२. १; २; १०६. ४; १०८. २; ११९; १२९. २; ४; १३४. २; १३५; १३६. ४; १३८. २; १३८; १४०. ३; १४६. ३; १५०. ३; १५४. १; १५६. ३; १६०. २; ४; १६२. ३; ५; १६४. ४; १६४; १६६. ४; १६८. २; १७०. ७; १७०; १७१; १७२. १; २; १७८. ४; ७; १८१; १८२. ३; ८; १८६. ३; १८८. ८; १९०. १; १९४. ५; ७; २०२. ५; २०४. १; २०६. २; ३; ६; २०८. ५; ७; २१०. ४; २१३. २; २१४; २२३. ४

नहि—नहीं १. ९३. ४; ३०७. ४; ५. २३. २; ७. १७८. ४

नहीँ १. १२१. ५; १८१. २; २१०; ५. ४. २; ६. १३८; ७. ३२. ६; १६०. ३; २०९

नहुष—एक राजा का नाम २. २२९

नाँघइ—लाँघेगा ४. ३२. १

नाँघउँ ४. ३३. ४

नाँघत २. १५९. १; ७. ९४. २

नाँघि ५. २८. १; ३३. ४; ६. १२. १; ५५. २; १५७. ४

नाँघेउ ७. ९४. ३

नाँघेहु ६. ५५. १

नाँचा ६. ११९. ४; ७. ५०. ३

नाँची २. ३५. ३; ६. ७३. १

नाँठी—नष्ट होने से १. १६३. ३

ना २. २१०. १

नाइ १. २३. ५; ४४. १; ४८; ५५. २; ७८. ४; १०५; ११४; १५५. १; २४०; २४८; २५०. ३; २५८; २८५; ३२७; ३६४; २. ५८; ७६; ७८. १; ८३; ८६; १०५; १०९; १३८. २; २०३; २०७.

प्रान १. ११. २; ३५. १;—पियारी ९५. २;—पतिचरना ९८. १; १२५; १२८. २; २४०. २; ३;—नाथ ५; २४२. ३;—प्रिय ३२३; ३६९. ५; २. १६. ४; २४. १;—प्रिया २६. ४; २७. ३; २९. २;—प्रिय ३०. १; ४३. १;—सम ४७. १; —समाना ४८. ३;—पियारे ४९. ४; ५१. ५; ५५. ३; ५७. ४; ५९. २; ६०. १;—प्रिय ७५. ३; ८०. २; ३;—अवलंबा ८३. ३; ९२. ३;—पति ९८. २;—पतिसंगा ९९. ४;—नाथ १००. १; १०४;—प्रिय १२६. २; १३१. ४; १५५. १; —पिरीते १५६. ४; १६३. ३; १६७. ३; १७०. १; १७३. २;—पियारे २०१. १;—प्रियरामप्रतिकूला २०२. २; ३१७. ३; ३२१. १;—प्रिय ३. ९; ३१. २; ३५. ८; ४. ८; २७. १; ५. २१. २; स्त्र—३०. ४; ३०; ४५. ४;—समान ४९;—पति ६. २०. ४; २२; ५३. ३; ६२. ५;—अवसेखा ७१. ४;—अवसेपा ७५. ३;—अधारा ८३. ७; ९०; ११५; राम—प्रिय ७. ७;—सम ६१. २;—प्रिय ६१; ७०. १; बालि—९२;—प्रिय १३१. ५; —समाना १३२. ३;—प्रिय १३३; —सम १४९

प्रानहुँ १. २३६

प्रानहु २. १७०. १

प्राना १. २३०. १; २. ५९. २; ८२. ४; ८७. ४; १४५. ३; १७५. ३; २०९. १; ३. ४०. २; ४. १२. १; ५. २४. ३; २७. ४; २९. ३; ६. ६२. ४; ७५. ३; ७९. ३; १२४. ५; १४१. १; ७. ५. ४; ८०. २

प्रानी १. १३७. ३; २१६. २; २४९. ४; ३. २१. ३; २२. ८; ६. ४६. २; ७. ६१. २; ६८. ३; ७८. ३; १३१. ५; १५२. ४; १६४. १; २०६. ८; २०८. १३

प्राप्नोतु—प्राप्त करे ७. २२५

प्रावृट—वर्षाऋतु ६. ६६. ५;—जलद १०२. २

प्रिय—पति, मीठी, अच्छा, प्यारा, मनोहर १. १९; ३२; ३४. ४; ३४; ३६. २; हरिहर—४२. २; जग—४२. ३; ५१. ६; सिव—७; ५२. ३; ५९; अति—११७. २; १२८. २; ४; —चानी १३१. ३; १४९. २; १५५. १; ३; १६६. ३; १७०. ३; १७४. ४; १७८. २; १९०. २; परम—१०२. २; सिंधुसुता—कंता २१८. १; २२०;—नारी २२२. १; अति—सीला २२४. ४; २२५. १; राम—२२९; २३०. ४; २३१. ५; २३६; २४०. २; २४९. ४;—सखि २६२. ४; २७५. १; २८०. ३; अति—३११. २; प्रान—३२३; ३२४. ४;

बखानहिँ ५. ५४. १; ७. ४९. १

बखानहीँ ६. १०२. १; ७. १४२. ५

बखानहु ७. २०८. ३

बखाना १. २४. १; ३३. ५; ५८. ७; ८९. २; १००. १; ११८. १; १२५. ४; १३५. ३; १६१. ४; १७०. ४; २११. ३; २१७. ४; ३३०. २; ३६६. २; ३७७. ३; २. १२. १; ८७. ४; ९६. ३; १३९. ३; २२१. ४; २३७. १; ३. २१. १; ४. २३. २; प्रताप—६. १३०. २; ७. १२. २; २०. ४; ९१. २; ९२. २; ९६. १; १२३. ३; १३४. २; १५४. ३

बखानि २. १११; ६. १०२

बखानिहैँ ४. ३३. ७

बखानी १. ३७. ४; ४९. १; ५४. १; ५७. ३; ६७. ३; ६९. ४; ७०. २; ७६. ३; ८५. ३; ९९. ३; १०९. ४; ११२. २; १२३. ३; १२४. ४; १२७. २; १२९. २; १३५. १; १४९. २; १५८. ३; १८१. १; १८९. २; १९२. ४; १९३. ३; १९७. ३; २६२. १; २७१. २; २७५. २; २८०. १; ३२८. १; ३७९. ४; ३९५. १; २. १२६. ४; १३३. ३; १४०. ४; १५४. ४; १५७. २; १७२. ४; २१६. १; २३२. १; २३४. २; ३२२. २; ३. ७. २; २१. ३; ३२. २; ५३. ५; ५; ४२. १; ६१. २; ६. २१. २; ९४. ३; ७. १२. ४; ५४. २; ७५. ४; ९०. ४; ९६. ४; १३१. १; १९०. ६; १९८. १; २०८. १; २१९. ४

बखाने १. १२. १; २२. ३; २४. ३; ४६. ४; ९३. २; १५९. १; १६८. २; १८३. ३; २५८. १; ६. १४८. १; ७. १८८. ३

बग,—ध्यानी १. १९२. ३

बगमेल—हल्ला मचाकर ३. २३; ४६

बगरे—फैले ७. १६२. ५

बंका—बाँका, मज़बूत १. २०८. ४; ५. ३३. ३; ६. २७. १

बंगा—व्यंगोक्ति कहनेवाला ६. ४१. ३

बच,—बचन—रचना १. १७९. १; २१८. ३; पितु—२. २२८. २; ६. ८०. ३;—बिकलाई ८३. ३; १३५. ४; ७. ४५. ४; १३२. ४; २१९. २

बचउँ १. ३११. ४

बचन,—कथन—बज्र १. १०. ६; बल—१७. ४;—प्रवीनू १८. ४; ३४. ५; ५९. ४; पिता—७०. ४; राम—७६; ८३. ४; ८७; ९६. २; ३; ९७. ३; १०१. १; ४; १०२. ३; १०२; १०३. ३; १०४. ३; ४; ११२. १; ११३. ४; ११४; ११७. १; २; ११७; ११९. ३; उमा—१२१. ५; १२२; १२३. ५; १२६. २; १३४. १; १३९. ३; ४; १३९; १४३; १४४. ४; द्विज—१५०. १; १५५. १; संभु—१५६. १; १५६; १६०;

५; २१. ६; ४. २९. ४; ६. ११२; १२८. १; ७. १२. ३; ४६. २; ५१. २; ५१

बहइ १. ३१३. १; २. १३८. ४; २१७; ३. ५२. ४; ७. ९. ५

बहई १. ९३. ४; २. ९१. ३

बहति—बहता है, ढोता है ६. ११२. ६

बहरावा—सुन करके न सुना ५. २२. १

बहहिँ—ढोता है ६. ४४; ११३. ३; ७. ४६. ४

बहहीँ १. ९०. १

बहहू ६. ५६. ३

बहाई १. २०१. ३; ७. ६९. ४

बहनी ३. २२. २

बहिर ६. ३०

बही १. २४४. १; ५. ५०. ३

बहु १. १७. ७; २३. १; ५५; ५८. ३; ४; ८; ५९. ५; ६१; ७४; ७८. २; ८०. ४; ८६; ८७. ४; ८९; ९७. ४; १००. २; ३; ४; ११०. ५; १११. ५; ११७. ४; ५; ११८. ४; १२१ ५; १२५. ५; १२६. १; १२७. १; १२८. १; १३३. ३; १३४. ४; १४४;—रंगा १५४. १; ३; १५८. १; १६०. २; १६१. ३; १६५; १६६; १६८. ३; १७०. ४; १७३. १; २; १७७. ३; १८९. १; १९०. ४; २०३. १; २१४; २१५. ५; २१६. १; २२१. २; २२३. ४; २२७. ३; २३१. ५; २३४. १; ४; २३५. १; २; २३८; २४०. ४; ५; २४०; २४३. ४; २४५. ४; —बरन २५७. ३;—रंगा २६०. ४; २६६. ३; २७५. १; २९५. ३; २९६. १; ३०४. ४; ३०७. ३; ३०९. २; ३२१. ३; ३६६. २; ३७०. १; ३८६. ३; ३८८. ४; ३९४. ५; २. ७. २; ९. ३; १८. २; २२. २; २४. २; ५८. ३; ६०. २; ८४. २; ८६. २; १००. ३; ११०. ३; ११८; १३०. ४; १३३. ४; —भाँती २५६. ३; १७०. ४; १७१. २; २१३. ४; २१७. २; २५१. २; २६६. ३; ३१७. १; ३२६; ३. १५. ९; १७. ६; १८; २४; २६. १; ६; ९; २९; ३०; ३४. १; ३५. ४; ३७; ३९. ४; ४१. १; ४; ४२. ३; ४५. १; ८; ४८. २; ५२. १; ५३. ५; ४. ५. १; १०; १४. २; ३; २३. ४; २६. ६; २७. १; २७; ३०. १; ६; ३१. ३; ५. ३. ७; ८; ३; ९. १; २; १०. ४; १०; १८. १; १९. ५; २३; २५. ३; —कोटि २६. १; २७; ३४. ४; ३५. ६; ४३. २; ५४. ३; ६. ५. ३; ८. ४; २१. ४; २३; २८. २; २९. २; ४१. २; ४२. ३; ४३. २; ४३; ६. ६२; ७१. ३; ७३. २; ८०. २; ८३. ९; ९१. ३; ९३. ५; ९४. २; ३; ९५. १; १००. ४; १०२.

वाजी–अश्व, घोड़ा १. १८५. १; २२३. ४; ३. ४८. ३
वाजीगर ६. ४४. ५
वाजु २. २९
वाजू २. २३१. ३
वाजे १. ११५. ४; १२६. ५; १८२. २; २९५. २; २९८. १; ३१९. १; ३७२. ३; ३७७. १; ३७९. २; ६. १०१. ४; ७. २०. २
वाट–मार्ग १. ३२०. २; ३७७. २; २. १२. २; १०१. ३; १६०. १; ५. ३०; ९५. ३
वाटा २. २१३. ३; वर–३. १२. २; ६. ६१. ३; ८९. २
वाटिका–फुलवाड़ी १. ५८; सुमन–१८३. ४; २४५; विप–२. ६०; २१६. २; असोक–५. १८. २; सुमन–७. ५१. १
वाद २. १९; ४. १७. ६
वादर १. १७. ७; २६७; ७. ११७. २; २१०. ५
वादल १. २११. १
वादहिँ १. १४८. ३; ७. ५४
वादा १. १६३. ४; २०९. २; ३१६. ३; ६. ९४. १; ९६. २
वादि १. १७. ७; ६. १२३. १; १२४. १
वादी १. १२८. १; २. ३५. १; ३. ४४. १; ४. ६. ७; ५. १४. १; २५. ३. ५८. ४; ६. ११८. १; १३९. २; ७. १८२. ७
वाढ़े १. २१६. १; ३०९. ४; ३७२. ३; २. १३६. ३; २६१. २; ७. १४. ४
वात १. ७८; ८६. ४; १०७. २; ११९. ५; १३८. ४; ३०३. ४; ३२३. ३; २. १७. २; ४; १९. १; ४; २१. ३; २३. २; २९. ४; ३३. २; ३५. ३; ४३. ३; ४६. ४; ४७. ३; ४८. १; ४९. ४; ५१. ५; ७७. २; ९६; १६१. १; २१२; २१८. २; २१८; २५७. १; २६०; ३. ३२; ४७; ५. ३२. २; ४०; ५५. ४; वातहिँ–६. २७. २; ४६. ४; १२८. ६; ७. ९. १; १५६; १९४. ४; २०२. ४; २०६. २; २०८. १५
वातन्ह ५. ५८
वातहिँ,–वात ६. २७. २
वाता १. १७. ५; ११९. ४; ३६६. १; २. २७. ४; ८६. ४; २५४. ३; २५७. १; ३. २२. ६; ३०. १; ४०. ३; ४२. ३; ४४. २; ५६. ४; ४. ३. ५; २६. ७; २९. १; ५. २. १; ३८. २; ४६. ३; ५५. २; ६. ८. ५; ८३. २; ७. १२५. १; १७०. २
वाति,–वत्ती दीप–२. ६०. ३
वाती ७. २००; २०६. २
वातैं २. १२३. २
वानैत–वाणैत १. २५८. ४
वातुल–वावला, पागल १. १३९. ४
वादले–वादल ६. ७०. २
वादहिँ–वाद करते हैं, झगरा करते हैं

२१६. ४; ३२१; ४. ३२. ३; ५. १३. ४; ६. ७४. ४; १०९. ३; १३७. ५; ७. १९०. ३

बिसमित—विस्मित हुआ, चकित हुआ १. ९७. ३

बिसर—भूल गए ७. १८२. १

बिसरा १. २६६; ४. २६; ६. ११८. १

बिसराइ १. २४

बिसराइयो ६. १५७. ८

बिसराई १. ८६. १; ७. ४६. १; ६६. ३; १२५. १

बिसराते ३. ४८. ३

बिसरायउ ७. ५. १

बिसरावहिँ ७. ५०. १

बिसरावही ँ २. ७६. ५

बिसरि २. २९. १; ५७; ५. ५४. १; ७. ३६. १

बिसरी १. ९८. २; २. १७७. ५; ६. ७१. ४

बिसरे २. २४१. १; ७. ७. ३; ३५. १

बिसरेउ २. १६१

बिसारउ २. २०६. ३

बिसारद—चतुर १. ३४. ३; ३. ५८. २; ७. २१०. ६

बिसारहिँ २. २१६. १

बिसारा ४. २२. १

बिसारि—छोड़ कर, बिसार कर ३. ४५; ५. २२

बिसारी १. १०९. २; १५९. १; २२९. ३; २७३. ३; २९८. ३; ३७८. ४; २. १११. १; ११५. १; १४१. १; १६५. १; ३. २८. ३; ४. २१. २; ५. ८. १; १४. ४; ६. १३७. ६; ७. ६५. ४; २१३. १

बिसारेउ ४. ४

बिसारेहु ३. ३७. १

बिसालं ३. १६. ४

बिसाल—बड़ा १. ११८. २; १३०; १५९; १८४. २३१. ३; २४७. १; २५७. ३; २७६. ३; २७६; २७७; २८२; ३०१. २; २. ११६; २३८. २; ३. १५. ११; १८. ३; २३. ८; ४१. १; २; ४८. १; ५. ३. ४; ८; १६; १९. ३; ४७. १; ५६. ३; ६. ५. १; २३. २; ६१. २; ७९; १०२. ८; १४०. ३; ७. २७. ६; ११३. १

बिसाला १. १००. ३; १०६. ३; १३०. १; १६०. ४; २२१. १; २२४. १; २४२. १; २५२. ३; २५७. २; २७८. २; ३०१. ४; २. १३४. ४; २३८. १; २९८. २; ३. ४३. ४; ४. ८. ७; १०. ४; ५. ३१. ५; ५६. ४; ५७. ३; ६. ७४. १; १०१. ५; १४४. ४; ७. ८०. ५; ११९. ३; १५२. २; १५४. ४; १७८. ७; १८८. ८; २०८. ३; ८

बिसिख—तीर, बाण ३. २३. ८; २६. १; १०; ५. ६१. १; ३; ६. ५७. ?; ९३. १; ९९. ५; ११६

बिसुद्ध—पवित्र २. १७१. ४; ७. ९८. ४; १२७

भवद्, – अंघ्रिनिरादर ७. ३२. ५

भवन – घर, आश्रय-स्थान मंगल – १. १९. १; २१. २; ७०. ३; ८०. २; ८५; ८७. १; ९५. १; १०१; १०३. १; १०३; १०४. ४; १०४; ११३. ४; ११९. ३; १२०. ३; १२१. १; १२२. ५; १२३. ३; १२६. १; ५; १२७. १; १३६. २; अहि – १३७. १; १६५. ३; १७०; १७३. ४; १८३. ४; २०२. १; २०५. २; मनि – २०८. ३; २२७. ४; २२८. १; २४०; – झरोखन्हि २५३. २; लता – २६५; २६८. २; ३२२. ३; ३२७; ३२९; ३३०. २; ३३०; ३८६. ४; ३८९. २; ३९१. ३; २. २४. २; २५. २; कोप – २६. १; ३९. ३; ४८. १; ७१. ३; ७२. १; ९१. ४; ११२; १२३. १; १४८. ३; १६०. २; ३२७. १; ३. २४. ३; ३०, ३४. १; ४. १४. ५; ५. ५. ४; १०; १२. ३, १४. २; ३४. ४; ४९. २; ६३. ५; ६. ९. २; १३. ३; २०. ३; ३९. ८; ५४; ६४. १; ८३. ४; ११०. ३; १२५. १; १३१; १४८. २; ७. १९; २१; २२. १; ३५. ३; ३८. ३; ५०. ५; ५८; करुना – १४३; सुभगुग – १०.०

भवनन्हि ७. ५१. ३

भवनु १. ५०. ४; १०३. २; १३२. २; ३३०. ४; भूप – ३५८. १; ६. ६४. २

भवन्त – आपकी ७. ३२. ६

भवँर १. ६१. ४; जमुन – छवि १७५; २. ३५. २

भवाँई – घुमाकर ६. २७. ३

भवहि – शिवजी को १. १२५. १

भवानि १. १२४. ५; १२४; १४५; ४. १

भवानिहि १. २६९. ५

भवानी – पार्वती १. ३५. ३; ५४. १; ६४; ६९. ४; ७०. १; ७४. ३; ८२. २; ८६. २; ८७. १; ९१. १; ९६. ४; ९७. ३; ९९. १; १०४. २; १०५. ४; ११३. ४; ११४. १; ११४; १२१. ३; १२२. १; १२३. ३; १२४. ४; १२५. १; १२६. ४; १२७. २; १३१. १; १३८. ४; १४३. ३; १४९. २; १६९. २; २१६. २; २३२. १; २६८. २; २६९. ३; २८०. ३; २९०. ३; ३. ४. ३; १५. ५; ३२. ४; ५. २०. २; ३४. १; ४३. १; ६०. ६; ६. ६५. ३; ९२. १; ९६. १; ७. २२. १; ५५. ४; ७५. ४; ८५. १; ८६. ५; ७. ९०. ४; ९६. ४; १७४. ५; १०४. ३; २१०. ४

भवितव्यता – होनहार १. १८८; २. २६. ५

भाँग १. ४२

भाँड़ – भंडा-फोड़, भेद खुलना २. २१९. १

भाँडे १. २२. १

भाँति – प्रकार १. १९. २; २३. १; ३९; ५४. १; ३; ४; ८६. ४; ८८. १;

सरिस १३; २४; कोटि–७५; –खंडा ९०. ३; ९२. ४; ९८. ७; १०८. २; ३; ४; १०९. ५; ११६. ४; १२६. ६; कलप–७. ५. ३; २४. ३;–संग ३२;–संगा ५६. ४; –संग ६८. ३;–संगति ६८. ३; ७५. १;–संगा ८५. २;–संग ८५; ९१; कोटि–कामा ११०. ३; १२०; कलप–१२३. १; काम–सुभगतन १४०. ४; सक्रकोटि–सरिसविलासा १४०. ४; नभ–कोटिअमित १४०. ४; ससि–कोटि १४०; रबि–कोटि-प्रकास १४०; मरुतकोटि–बिपुलबल १४०; धूमकेतु–कोटिसम १४१; कालकोटि–सरिस १४१;–कोटि-पताला १४२. १; कामधेनु–कोटि-समाना १४२. २; सिंधुकोटि–सम २; रुद्रकोटि–सम ३; कोटि–३; बिधि–कोटि ३;–कोटिअहीसा ४; धनदकोटि–सम ४; कोटि–खद्योत-सम ५;–मारग १५८. २;–संगा २०६. १०;–संगति २१३. ३; –संगा २२०. ४;–संगति २२१. ३; २२३. ६

सतत–निरंतर २. १९

सतरूपहि १. १७८. २

सतरूपा–स्वायंभुव मनु की स्त्री १. १७०. १; १७६. ३

सतानंद १. २७२. ५; २७२; २९६. ४; ३६५. ३

सताम्–सज्जनों का, (की, को) ३. ६. ३; ६. श्लो. ३

सतावन, देस–६. ९८. २

सतावहिँ १. २३९. ५

सतासी १. ८४. १

सति,–सीधा, सत्य, रहने पर–भाऊ १. १९०. ४; २४९. २; २. ४३. ४; २१२. २; २६२

सतिभाये १. १०. १

सतिहि १. ७९. ३; ८०. १; ८२. ३; ८७. २; ४

सती,–पतिव्रता, साध्वी, दक्ष की पुत्री, शिवजी की स्त्री–सिरोमनि १. ६३. ४; ७०. १; ७१;–कपट्ठ ७३. २; ३; ७४. ३; ७५. २; ४; ७६. ३; ७६; ७७. २; ७७; ७८. ३; ७९. १; २; ४;–उर ८०. ३; ४; ८०; ८२; ८३. १; ८४. २; ८५. २; ४; ८७. २; ८८; ८९. ३; ९९. ४; १०३. ४; १०७. १; १२२. ३; ५; १२८. ४; १५०. ४;–सरीर १६९. २; –मनु २८४. १; ७. ७९. ४; ८० १; १६०. २

सत्,–चितआनंद ७. ४८;–चरित ५१. ५

सद १. ५१. ७;–गुरु ५२. २;–ग्रंथ १०८. ५;–गुन ४. १६. ४; ग्रंथ–१६;–गुरु ४. २०;–गुन ६. १३३; –गुनसिंधु ७. ७. ९;–गुनाकर ३०. ६; ५६;–गुरु ६७. ४;–ग्रंथ १५२;

सुधाकर—चाँद १. ११. ४; २. ५६. १; ७. ७४. ३

सुधारत ६. १४. ३

सुधारा १. ३०९. ३

सुधारि १. १३. २; ३०८. १; २. १; ३००; ३. २३. ८; ६. ९२. ३

सुधारिहि १. ४४. २

सुधारी १. ४०. २; ५७. १; २. ३१८. २

सुधारे १. ३९१. ३; ६. १११. ४

सुधि—सुधबुध १. ४६. १; ७८. ३; २७३. ३; ३२३. ४; ३२४. ४; २. २०. २; २३. २; ८९. १; १०९. ३; १३६. १; १४२. २; १५६. २; १५८. १; १७७. ५; २०३. १; २०७. ४; २६६. २; ३. २८. ४; ४५. ५; ४. २१. १; २; २४. ४; २५. ४; सीता—२६. १; २९. १; २; ३३. ६; ५. २. २; ९. ४; १५. ४; १६. १; २९. १; ६. ९८. २; १०२. ७; १०८. ४; ११०. १; तन—१५७. ६; ७. ३५. १; १४८. २; १५०. ५

सुद्ध १. ३५. ३; सांत—मम २७५. २; २. ८८; ७. ३२. ८; १६६. १; २१५. ४

सुन ४. ११. ४; ५. ११. ४; ७. २२१. २

सुनइ १. १०. ५; ६९. २; १०२. ३; १३७; १४२. ३; १८३. ३; २१५. ५ २. ४७. ४; १००. २; १४६. २; ५. १२ २; १३. ३; ६. ४८. १; ७. ८८. २

सुनउँ ७. १८२. ३; ६; २१५. २

सुनऊँ ७. १८८. ६

सुनावतु १. ११५. २

सुनत १. ७. ५; १०; १७. ६; ३१. १; ३६. २; ४४. ३; ५६. ३; ४; ६१. ३; ६२. ३; ६४. १; ७०. ३; ८५. २; ९७. ३; ९७; ९९. ३; १०२; १०४. २; १०६. २; ११७. २; १३२; १३७. १; १६४. ३; २२४. ३; २२५. ३; २९७. ३; ३०३. १; ३०८. १; ३६७. १; ३६९. ४; २. ८. २; १०. १; २३. २; ३२. ४; ३८. ३; ४२. १; ५१; ७२. ४; ९४; १०५. १; १११. १; ११९. ३; १३६. २; १३७; १३८. २; १४७. ४; १५५; १६१. २; १६१; २०७. २; २०८. ४; २१९. १; २२४. १; २२५. १; ४; २२७; २५२. ४; ३. ५. २; १७. ५; २४. ४; ३०. १; ३४. १; ३६. ८; ३७. ८; ३९. ६; ५९. १; ५; ४. ९. १४; २३. ४; २५; २९. ४; ३३. ७; ५. २. २; ६. ३; ६; १०. ४; १२. ३; १५. ४; १७. १; २४. ३; ५; २५. २; ३०. ४; ४२. १; ५०. २; ५३. ३; ५८. २; ६०. १; ६२; ६. ८. २; ५; १२. २; ५; २३. ४; २८. १; ३०. २; ४२. ४; ५३. २; ६७. १; ३; ८०. ४; ९२. ३; १०४; १०९.

१०४. ३; २१९. ३; २२०. १; २९०. १; ३. ३. ३; ४; ७. ३; ९; १३. १; १६. १; २२. ७; ३६. २; ६; ३७. ८; ३९. ७; ४२. ४; ४४. २; ४; ५६. २; ५७. १; ५८. ३; ५९. ४; ४. ३. २; ५. ४; ८; ९. १४; ९; १२. १; १४. ४; २३. २; ५. ७; ८. २; ९. २; ४; १०. २; १२. ३; १४; १६; १७. ४; २१. २; २३. ४; ३०. १; ३२. ३; ४; ३९. २; ५०. १; ५२. ३; ६१; ६. ११. १; ४; १२. ४; १३. २; २२; २५. २; ३०. ५; ३३. १; ३६; ३९. ६; ४०. १; ४१. ४; ४२. १; ४३. १; ४४. ५; ४५. १; ५७. ४; ७६. १; ८४. ४; ८६. ४; ८९; ९८. २; ५; ११५. २; १२४. ६; १२८. २; १३३. ५; १३३; १४१. १; २; १४४; १४८. ३; ७. ७. ४; ६; १२. १; १४. ६; २६; ३१; ३४. १; ३८. १; ४४; ६०. ३; ४; ८१. २; ८३. २; १०८. १; ११७. २; ११९. २; १२१. ४; १२३; १२९. १; ३; १३०; १३१. १; १३१; १३६. ३; १६०; १६२; १६८. १; १७०. ५; ७; १७८. ६; १८६. ८; १९०. १; १९२. ३; ५; १९४. २; ७; २०४. ३; २०८. ९; २२०; २२३. ५

सुने १. २६२. २; २. १७७. ४; ५. २१. १; ६. ३९. ६; ७. ७२. २

सुनेउँ ७. ७५. ५; ८२. ४; ९६; १४२; १९४. ४

सुनेउ १. २१३. ३; ३. १३. १; ६. ९. १; ६३

सुनेऊ ६. ८४. ३

सुनेहि १. ३०५. २; ६. ४०. ४; ४२

सुर,—देवता मही—चरना १. ७. २; —अनीक १०. ५; १७. ७; —सरिसम २४. ५; —सरिता ३१. १; ३४. २; ४१. ३; —सालु ४३; ५१. ७; ५९. १; —सरिताहि ६१. १; —सरिही ३; —कुल ६३. ३. ७३; ३; —स्वामी ७६. २; ७७; ७८. १; ८४; ८५. १; —सुंदरी २; —सरि ९३. ४; ९४. १; —सरिजलकृत ९४. १; १०६. ४; १११. ४; ११२. ३; —समुदाई ११५. ४; ११५; —त्रिय ११६. ३; —समाज ४; —त्राता ४; ११७. १; —सेन ११९. २; —तरुहिँ १२०. छं. ५; १२३. ४; ५; १२४. १; ३; १२४; १२५. २; —ईसा २; १२७. २; १२९; —सरित १३०; —तरु १३२. २; —नाथा १३३. ४; —राया १३४. २; —हित १३७. ४; —धेनु १३७; —लोक १३७; १४१. ३; १४८. ४; —पतिमदमोचन १४९. ३; १४९; १५०. ३; —कारज १५०; —सरी १५३. १; —पतिहि १५३; —नारि १५४. २; —पतिसभा १५५. २;

ADDENDUM

ADDENDUM

अम्भोधर, – जल धारण करनेवाला, जलधर, बादल मोह – पूगपाटनविधौ ३. १
अम्भोधि, – समुद्र ब्रह्म – समुद्भवं ४. २
अम्भोधेः, – समुद्र के भव – १. ६
अयम्, – यह सः – २. १
अरण्य, – वन सीतारामगुणग्रामपुण्य – विहारिणौ १. ४
अर्थ, – सङ्घानाम् १. १
अव्ययं – न नष्ट होनेवाला ४. २
अशेष, – संपूर्ण तम् – कारणपरं १. ६
असुराः, – राक्षसगण ब्रह्मादिदेव – १. ६
अस्तु – होवे २. २
अस्मदीये – हमारे ५. २
अहं – मैं १. ५; ६; ५. १
अहेः – साँप का १. ६
आख्यं, – नामवाले को राम – ५.१
आख्यम्, राम – ईशं १. ६
आगम, – शास्त्र नानापुराणनिगम – सम्मतं १. ७
आढ्यौ, – संपन्न, युक्त शोभा – ४. १
आढ्यं ७. १
आतनोति – विस्तृत करता है १. ७
आदि, ब्रह्मा – देवासुराः १. ६; काम – दोषरहितं ५. २
आनन्द, – सुख – दं ३. १; सान्द्र – पयोद सौभगतनुं २
आपगा, – नदी देव – २. १
आभ, – तुल्य, समान स्वर्णशैल – देहं ५. ३; केकीकण्ठ – नीलं ७. १
आमय, – रोग, बीमारी संसार – भेषजं ४. २
आयत, – विशाल, चौड़ा राजीव – लोचनं ३. २
आरूढ, – चढ़ा हुआ, सवार पुष्पक – रामम् ७. १
आश्रितः – शरण में आया हुआ १. ३
इन्दीवर, – नीलकमल कुन्द – दरगौर सुन्दरौ ४. १
इन्दु, – चंद्रमा श्रीमच्छम्भुमुख – सुन्दरवरं ४. २; कुन्द – दरगौरसुन्दरं ७. ३
इन्दुम्, – चंद्रमा को पूर्ण – ३. १
इन्द्र, – देवताओं का राजा, स्वामी कोशल – पदकञ्जमञ्जुलौ ७. २
इव, – तुल्य अमृपा – १. ६
ईड्यं, – पूजनीय को, आदर करने योग्य को नौमि – ७. १
ईशं, – स्वामी को जानकी – ७. १
ईशम् १. ६
ईश्वर, जगद् – ५. १
ईश्वरम् – ईश्वर को, श्रीराम को १. २
उद्भव, – उत्पत्ति – स्थितिसंहारकारिणीम् १. ५
उभौ – दोनों ४. १
उरसि – वक्षःस्थल पर, छाती पर २. १
एकः – एकमात्र, केवल, सिर्फ १. ६
एव – ही १. ६
कञ्ज, – कमल कोशलेन्द्रपद – मञ्जुलौ ७. २; कारुणीककल – लोचनं ३
कटि, – कमर – लसत्तूणीरभारं ३. २

नाना, — अनेक — पुराणनिगमागमसम्मतं १. ७
नाराच, — बाण — चापं ७. १
निकर, — समूह कपि — युतं ७. १
निगम, — वेद नानापुराण — आगमसम्मतं १. ७
निगदितं — वर्णन की गई, कही गई १. ७
नित्यं — सदा १. ३
निधानं, — खजाने को सकलगुण — ५. ३
निबन्धम् — रचना को १. ७
निभः, — तुल्य (कांतिवाला) शशि — २. १
निर्भरां — पूर्ण ५. २
निर्वाण, — मोक्ष — शान्तिप्रदं ५. १
नील, — नीला रंग — अम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं २. ३
नीलं — श्याम रंग (वाले) को केकीकण्ठाभ — ७. १
नुतौ, — स्तुति किए गए श्रुति — ४. १
नौमि, — नमस्कार करता हूँ — ईड्यं ७. १; ३
पतिम्, — पति को, स्वामी को अम्बिका — ७. ३
पते, — हे स्वामिन् रघु — ५. २
पथि, — मार्ग में — गतं ३. २
पद, — चरण, पैर कोशलेन्द्र — कञ्जमञ्जुलौ ७. २
पयोद, — जल देनेवाला, जलधर, बादल सान्द्रानन्द — सौभगतनुं ३. २
परं, तमशेषकारण — १. ६
पश्यन्ति — देखते हैं १. २
पाटन, — फाड़ना, तितर बितर करना मोहाम्भोधरपूग — विधौ ३. १
पाणौ — हाथ में २. ३; ३. २; ७. १
पातु — रक्षा करे २. १
पाद, — चरण, चतुर्थ भाग यत् — प्लव १. ६
पाल, — पालन करनेवाला भू — चूडामणि ५. १
पित्त ७. २०८. १५
पिबन्ति — पीते हैं ४. २
पीत, — पिया गया, पीत वर्ण, पीले रंग का — अम्बरं ३. २; — वस्त्रं ७. १
पुङ्गव, — श्रेष्ठ रघु — ५. २
पुण्य, — सीतारामगुणग्राम — अरण्यविहारिणौ १. ४
पुराण, नाना — निगमागमसम्मतं १. ७
पुष्पक, — विमान का नाम — आरूढरामम् ७. १
पूग, — समूह, सुपारी का वृक्ष मोहाम्भोधर — पाटनविधौ ३. १
पूर्ण, — पूरा — इन्दुम् ३. १
प्रदा — देनेवाली मञ्जुलमङ्गल — २. २
प्रदौ — देनेवाले भक्ति — ४. १
प्रदं — देनेवाले को निर्वाणशान्ति — ५. १
प्रध्वंसनं — नष्ट करनेवाले को कलिमल — ४. २
प्रयच्छ — प्रदान करो, दो ५. २
प्रसन्नतां, — प्रसन्नता को २. २
प्रसन्नम् — प्रसन्न को सु — ७. १
प्रियौ, — प्यारे गोविप्रवृन्द — ४. १

सम्बद्ध कथाभाग

अगस्त्य :—

इनके पिता मित्रावरुण थे। कहा जाता है कि एक बार मित्रावरुण ने उर्वशी को देख कामार्त हो वीर्यपात किया, जिससे इनकी उत्पत्ति हुई। कुछ पौराणिक कहते हैं कि इनकी उत्पत्ति एक घड़े में हुई थी, जिससे इनका नाम कुम्भसंभव, घटोद्भव तथा कुम्भज पड़ा। सुना जाता है कि एक बार इन्होंने बढ़ते हुए विन्ध्याचल को रोक दिया था, जिससे इनका नाम विन्ध्यकूट पड़ा। एक बार इन्होंने समुद्र को चुल्लू में भरकर पी लिया था, जिससे यह समुद्रचुलुक और पीताब्धि कहलाये। कहीं कहीं पुराणों में इन्हें पुलस्त्य का पुत्र भी बताया है। ऋग्वेद में इनकी कई ऋचाएं हैं।

अजामिल :—

यह एक आचारभ्रष्ट कुकर्मी ब्राह्मण था। इसने अपने पुत्र का नाम 'नारायण' रक्खा था। मृत्यु के समय यमराज के दूतों से घबरा इसने अपने पुत्र 'नारायण' को पुकारा। अन्तसमय पुत्रस्नेहवश भी ईश्वर का नाम लेने के कारण भगवान् ने इसे वैकुण्ठवास दिया।

अदिति—

देखो 'कश्यप.'

अन्ध तापस :—

अयोध्या के समीप एक अन्धा तपस्वी अपने परिवारसहित तप करता था। एक दिन उसका पुत्र जल भरने नदीतट गया। जब वह जल भर रहा था तब जल भरने के शब्द को सुन मृगयारत महाराज दशरथ ने उसे जल पीता हुआ हाथी समझ शब्दवेधी बाण से मार दिया। पुत्रशोक से संतप्त हो अन्धा तपस्वी अग्नि में जलकर

मर गया और चलते समय राजा दशरथ को यह शाप दे गया कि 'मेरी भाँति तुम्हें भी पुत्रशोक में प्राण त्यागना पड़ेगा।'

अहिल्या:—

यह महर्षि गौतम की स्त्री तथा वृद्धाश्व की पुत्री थीं। यह अत्यन्त रूपवती थीं। एक बार मुनि के गंगास्नान को चले जाने पर इन्द्र उनका रूप धारण कर आश्रम में पहुँचे। कुछ काल पश्चात् जब ऋषि लौटे और उन्होंने इन्द्र को आश्रम से खिसकते देखा तब उनके मन में खटका हुआ और उन्होंने योगद्वारा रहस्य जान इन्द्र को यह शाप दिया कि 'तू सहस्रभग हो जा'। अहिल्या को उन्होंने क्रोध में आ पत्थर बना दिया पर कुछ सोचकर बाद में कहा कि 'त्रेता में श्रीराम जी के चरणस्पर्श से तेरा उद्धार होगा।'

कद्रू:—

कश्यप ऋषि की दो पत्नियां थीं। एक का नाम कद्रू और दूसरी का नाम विनता था। पहली की सन्तति सर्प और दूसरी के पुत्र गरुड़ थे। एक बार दोनों में विवाद चला कि सूर्य के घोड़ों का क्या रंग है। विनता ने श्वेत और कद्रू ने उनका रंग काला बताया, गरम बहस हुई, जिसमें यह ठहरी कि जो हारे वह शेष जीवन दूसरे की चेरी बनकर रहे। कद्रू ने (अपनी सन्तति) सर्पों को घोड़ों के पास जाकर उनसे लिपट जाने को कहा। उनके ऐसा करने पर सूर्य के घोड़े काले दिखलाई पड़े और विनता को हार मानकर दासी बनना पड़ा।

कश्यप:—

यह ब्रह्मा के पौत्र और मरीचि के पुत्र थे। इन्होंने अपनी धर्मपत्नी अदिति के साथ कठोर तपश्चर्या की, जिससे प्रसन्न हो भगवान् ने इन्हें वर मांगने को कहा। इन दोनों ने प्रार्थना की कि आप हमारे पुत्र हों। त्रेता में ये दोनों महाराज दशरथ और कौशल्या हुए और श्रीराम जी के रूप में भगवान् इनके पुत्र बनें।

कैकेयी:—

देवासुर संग्राम के समय इन्द्र ने महाराज दशरथ को सहायतार्थ बुलाया था। युद्ध में बहली के पहिये की धुरी की कील तड़क कर दूर जा पड़ी। रानी कैकेयी ने कील की जगह अपनी अंगुली डालकर धुरी को संभाला। युद्ध के पश्चात् दशरथ ने प्रसन्न हो उनसे दो वर मांगने को कहा। कैकेयी ने दोनों वर उनके पास धरोहर रख दिये और कहा कि समय पड़ने पर मांग लूंगी। ये दोनों वर ही एक प्रकार से अशेष रामायण के आधार हैं।

गज :—

क्षीरसागर के वीच त्रिकुटाचल पर्वत है, जिस पर एक विशाल सरोवर है। वहां जाकर एक मत्त गज हथिनियों के साथ जलक्रीडा करने लगा। उसी समय एक भारी मगर ने उसकी टांग पकड़ ली। दोनों में सहस्र वर्ष तक खींचातानी चलती रही। अन्त में गजेन्द्र ने हार मान भगवान् की शरण ली। विष्णु भगवान् ने पुकार सुनते ही उसका उद्धार किया। गज और ग्राह दोनों शापमुक्त हो अपने अपने यथार्थरूप में आगये। ग्राह, जो पहले हूहा नामक गन्धर्व था, अपने लोक को चला गया और गज, जो वास्तव में इन्द्रद्युम्न नामक राजा था, विष्णु भगवान् का पार्षद वन गया।

गणिका :—

जीवन्त नामक एक नवयौवना रूपवती स्त्री पति के चल बसने पर आचारभ्रष्ट हो वेश्यावृत्ति से अपना गुजारा करने लगी। उसने एक सुग्गा पाला था, जिसे वह राम-नाम रटाया करती थी। इस पावन नाम के उच्चारण से अन्त में उसे वैकुण्ठवास मिला।

गरुड़:—

एक समय भुसुण्डि मोहवश वालक राम के हाथ से पूरी का टुकड़ा छीनकर भाग गये। राम ने गरुड़ को याद किया। भुसुण्डि और गरुड़ में लंवी ठनी। अन्त में भुसुण्डि हारे और श्रीराम की शरण आये, तव उनका छुटकारा हुआ। गरुड़ जी को उसी समय से अहंकार हुआ था।

गालव:—

ये विश्वामित्र जी के शिष्य थे। विद्यासमाप्ति पर इन्होंने गुरु को दक्षिणा मांगने पर वाधित किया। गुरु ने खीज कर आठ सौ श्यामकर्ण घोड़े मांगे। गालव राजा ययाति के पास पहुंचे, जिसने इन्हें अपनी पुत्री माधवी देकर कहा कि जो इससे एक पुत्र उत्पन्न करे उससे दो सौ श्यामकर्ण घोड़े लीजिये। गालव माधवी को क्रम से राजा हर्यश्व, दिवोदास और उशीनर के पास ले गये और प्रत्येक से दो दो सौ घोड़े लेकर उन्हें उनकी कामपूर्ति करने दी। जब गालव जी को चौथा राजा न मिला, तव वे छः सौ घोड़े और माधवी को ले गुरु की सेवा में पहुँचे। विश्वामित्र ने छः सौ घोड़े ले, माधवी से एक पुत्र उत्पन्न कर गालव को गुरुऋण से मुक्त कर दिया। हरिवंश में गालव को विश्वा-मित्र का पुत्र वताया है।

गंगावतरण:—

अयोध्या नरेश सगर को केशिनी नामक रानी से असमंजस और सुमति से

साठ सहस्र पुत्र हुए। असमंजस बड़ा निर्दय था, इसलिये राजा ने उसे देश से निकाल दिया। इसके विपरीत उसका पुत्र अंशुमान् सदाचारी और मृदुलस्वभाव था। सगर ने अश्वमेध रचा, इन्द्र ने यज्ञ का घोड़ा हर लिया और वह उसे कपिलदेव जी की कुटीर के पास वांध आया। सगर ने अपने साठ हजार पुत्रों को घोड़े के पीछे भेजा। वे खोजते खोजते कपिल की कुटी के पास पहुँचे और वहां घोड़े को वंधा देख ऋषि को 'चोर चोर' कहने लगे। कपिल जी ने क्रुद्ध हो अपनी 'हुंकार' से उन्हें भस्म कर दिया। कुछ दिन बाद अंशुमान् घोड़े और अपने चाचाओं को ढूंढता हुआ उधर आया और गरुड़ जी से जगबीती सुनकर दुःखी हुआ। गरुड़ जी ने कहा कि लोकपावनी गङ्गा जी के जलस्पर्श से तुम्हारे चाचाओं की मुक्ति होगी। अंशुमान् घोड़ा लेकर लौट आया और उसने घर जाकर राजा सगर से सब बातें कह सुनाई।

सगर गङ्गा जी के अवतरण का कुछ उपाय न कर सके। उनकी मृत्यु पर अंशुमान् राजा हुए। यह अपने पुत्र दिलीप को राज्य दे तपश्चर्या को चले गये और वहां उनका देहपात हुआ। दिलीप के पुत्र भगीरथ हुए। उन्होंने राज्याभिषिक्त होने पर राज्य मंत्रियों को सौंप दिया और स्वयं गोकर्ण तीर्थ पर जाकर तपस्या करने लगे। पहले उन्होंने ब्रह्मा जी को प्रसन्न कर गङ्गाजल और पुत्र का वर मांगा और पश्चात् महादेव जी को प्रसन्न कर उन्हें आकाश से गिरती हुई गङ्गा को धारण करने पर वाधित किया। वेग से गिरती हुई गङ्गा शिव जी की जटा में लुप्त होगई। तब फिर तप कर भगीरथ ने शिव जी से गङ्गाजल की याचना की। इस पर गङ्गा जी का प्रादुर्भाव हुआ और भगीरथ जी के पितरगण स्वर्ग को सिधारे।

चित्रकेतुः—

यह शूरसेन देश के राजा थे और इनके एक करोड़ रानियां थीं। पुत्र न होने के कारण ये अनमना रहते थे। एक दिन ऋषि अङ्गिरा इनके यहां पधारे और राजा ने उनसे अपनी वेदना कही। मुनि ने यज्ञ रचकर पटरानी को चरु खिलाया, जिससे पुत्रोत्पत्ति हुई। पुत्र को देख राजा का प्रेम पटरानी और लड़के की ओर खिंच गया, जिससे सपत्नियों के मन में हूक हुई। अन्त में रानियों ने पुत्र को विष दे उसका काम तमाम कर दिया। पुत्र के मरने पर राजा को घोर कष्ट हुआ और वह भांतिभांति से विलाप करने लगा। उसी समय ऋषि अङ्गिरा और मुनि नारद उधर आ निकले और उन्होंने उसे ज्ञानोपदेश दिया। राजा राज्य छोड़कर उनके वताये मन्त्रों के यथाविधि जाप से विद्याधर हो गया। पार्वती जी के शाप से यही वृत्रासुर हुआ था।

चन्द्रमाः—

चन्द्रमा ने दिग्विजय कर राजसूय यज्ञ रचा और मदान्ध हो अपने गुरु बृहस्पति से उनकी स्त्री तारा छीन ली। उसने दैत्यों की सहायता से देवताओं के साथ युद्ध ठाना और उनके बार बार कहने पर भी बृहस्पति को उनकी धर्मपत्नी न लौटाई। अन्त में ब्रह्मा जी मध्यस्थ बने और उन्होंने तारा बृहस्पति जी को दिलाई और नवजात पुत्र को चन्द्रमा की सन्तति बताकर उसे उन्हें ही लौटा दिया। यही पुत्र आगे चलकर बुध नामक ग्रह बना।

तपस्विनीः—

विश्वकर्मा की हेमा नामक कन्या ने अपनी नृत्यकला से महादेव जी को तुष्ट करके दिव्यधाम प्राप्त किया। वहां वह दिव्यनामक गन्धर्व की कन्या स्वयंप्रभा के साथ विहरती थी। जब वह ब्रह्मलोक जाने लगी तब स्वयंप्रभा से कहती गई कि—'त्रेता में जब रामदूत यहां आवेंगे, तब उनका सत्कार कर तुम राम जी के दर्शन करना। तब तुम्हें परमपद की प्राप्ति होगी।'

त्रिशंकुः—

सूर्यवंशी राजा त्रिशंकु ने सशरीर स्वर्ग जाने की इच्छा से गुरु वसिष्ठ से यज्ञ-विधान की प्रार्थना की, किन्तु वसिष्ठ जी के वैसा न करने पर वह उनके पुत्रों के पास पहुंचे। वहां भी कोरा जवाब मिला। राजा ने उनकी बात भी न मानी, जिस पर क्रुद्ध हो ऋषिपुत्रों ने उसे चाण्डाल बना दिया। चाण्डालरूप में राजा विश्वामित्र के पास पहुंचे और उनसे यज्ञविधान को कहने लगे। मुनि ने यज्ञ रचा, किन्तु जब देवता यज्ञ में अपना भाग लेने न आए, तब मुनि ने क्रुद्ध हो तपस्या के बल से त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग भेजना चाहा। उधर से इन्द्र ने बिगड़कर उन्हें मर्त्यलोक को लौटाया। राजा त्रिशंकु पर बुरी बीती और वे चिल्लाए। विश्वामित्र ने उन्हें वहीं रोककर दक्षिण की ओर सप्तर्षियों और नक्षत्रों की रचना आरम्भ की। इस बात से देवता डरे और भय-भीत हो विश्वामित्र के निहोरे करने लगे। तब विश्वामित्र ने कहा कि—मैंने त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग पहुंचाने की प्रतिज्ञा की है; अतः अब वे जहां के तहां रहेंगे और मेरे बनाये सप्तर्षि तथा नक्षत्र उनके चारों ओर घूमते रहेंगे। देवताओं ने उनकी यह बात मान ली और तब से त्रिशंकु उसी प्रकार बीचों बीच लटके हुए हैं।

दधीचिः—

ऋषि दधीचि बड़े तपस्वी थे। वृत्रासुर से परास्त होने पर देवताओं ने, भगवान्

के कहने पर, इनसे इनके शरीर की हड्डी मांगी। दधीचि ने परोपकारार्थ शरीर विसर्जन किया। उनकी हड्डी से विश्वकर्मा ने वज्र रचा। इसी वज्र से वृत्रासुर मारा गया था।

दण्डक :—

इक्ष्वाकु के पुत्र दण्डक विन्ध्याचल और नीलगिरि के मध्यस्थ प्रान्त के राजा थे। ये शुक्राचार्य के शिष्य थे। एक बार कामार्त हो इन्होंने गुरु की बड़ी पुत्री अरजा का कौमार्यभङ्ग किया। मुनि ने क्रुद्ध हो शाप दिया कि—'इन्द्र ! सौ योजन पर्यन्त पत्थर बरसाकर इनका राज्य नष्ट कर दे।' इस शाप से वह प्रान्त निर्जल हो गया और राजा के नाम पर दण्डकारण्य कहलाया।

दुन्दुभि :—

इस नाम का एक राक्षस था, जिसे वालि ने मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंक दिया था। इस पर्वत पर मतङ्ग ऋषि का आश्रम था। उन्होंने आश्रम के पास शव को देख बात ताड़ ली और बालि को शाप दिया कि 'यदि वह इस पर्वत पर आवेगा तो उसका मस्तक फट जाय'; इसी कारण वालि उस पर्वत से आंख कतराता था।

दुर्वासा :—

यह अत्रि ऋषि के पुत्र थे। इन्होंने और्व मुनि की पुत्री कन्दली से उसके सौ अपराध क्षमा करने की प्रतिज्ञा कर विवाह किया। कन्दली ने अपराध पर अपराध करके सौ संख्या पूरी कर दी। जब उसने एक और अपराध किया तब ऋषि ने क्रुद्ध हो उसे भस्म कर दिया। पुत्री को मरा देख और्व मुनि को अपार कष्ट हुआ और उन्होंने दुर्वासा को शाप दिया कि 'तुम्हारा दाप चूर्ण हो'।

एक बार राजा अम्बरीप एकादशी के व्रत में थे। व्रत समाप्त कर वे पारण की तैयारी में ही थे कि दुर्वासा उधर आ निकले। राजा से न्यौता ले ऋषि स्नान को चले गये और वहां स्नान ध्यान में ऐसे लटके कि राजा की पारणवेला ऊकने लगी। राजा ने डरते २ जल से पारण किया, क्योंकि जल भोजन में गिना भी जाता है और नहीं भी। जब मुनि स्नान से लौटे और उन्होंने पारण की बात भांपी तब वे आपे में न रहे और उन्होंने झट राजा के नाश के लिये कृत्या ला खड़ी की। पर भगवान् के सुदर्शन चक्र ने, जो राजा के शरीर की रक्षा करता था, प्रकट हो कृत्या को नष्ट कर दिया और बाद में वह ऋषि की ओर चमचमाया। दुर्वासा घबराये और बारी बारी से ब्रह्मा, विष्णु और शिव सब की शरण गये पर कहीं त्राण न पाया। अन्त में हार मान राजा के पास पहुंचे। राजा ने चक्र की स्तुति कर उसे शान्त किया। मुनि हरिभक्तों के गुण गाते हुए चलते बने।

ध्रुवः—

स्वयंभू के पुत्र राजा उत्तानपाद के दो स्त्रियां थीं। एक का नाम सुनीति और दूसरी का नाम सुरुचि था। सुनीति से ध्रुव और सुरुचि से उत्तम उत्पन्न हुए। राजा का मन सुरुचि पर अधिक था। एक दिन राजा उत्तम को गोद में लिये बैठे थे। इसी बीच ध्रुव खेलते खेलते वहां आ निकले और राजा की गोद में खिसक गये। विमाता सुरुचि ने उन्हें अवज्ञा के साथ वहां से उठा दिया। ध्रुव इस अपमान को न सह सके और तपस्यार्थ घर से चल दिये। उन्होंने दारुण तप किया। विष्णु भगवान् उनकी भक्ति से सन्तुष्ट होकर बोले कि—'तुम सब लोक, ग्रह और नक्षत्रों के ऊपर उनके आधार-स्वरूप होकर अचल भाव से स्थित रहोगे और जिस स्थान पर तुम रहोगे वही ध्रुवलोक कहलायेगा।' वर मिलने पर ध्रुव ने घर आकर पिता से राज्य प्राप्त किया और छत्तीस सहस्र वर्ष राज्य करके वे ध्रुवलोक सिधारे।

नल, नील:—

समुद्र तट पर रहने वाले ऋषि मुनियों के ध्यानावस्थ हो जाने पर नल, नील उनकी शालग्राम मूर्तियों को समुद्र में फेंक दिया करते थे। तंग आकर ऋषियों ने शाप दिया कि 'तुम्हारा छुआ पत्थर जल में न डूबेगा।'

नहुष:—

वृत्रासुर को मारने से ब्रह्महत्या दोष लगने के कारण जब इन्द्र मानसरोवर में जा छिपे, तब बृहस्पति ने इन्द्रासन को रीता देख राजा नहुष को उस पर बिठाया। यह अयोध्या नरेश इक्ष्वाकुवंशीय अंबरीष के पुत्र और ययाति के पिता थे। नहुष इन्द्राणी को देख उस पर रीझ गये और उन्होंने उससे प्रेमभिक्षा मांगी। बृहस्पति की सलाह से इन्द्राणी ने कहला भेजा कि 'यदि तुम सप्तर्षियों द्वारा उठाई गई पालकी में आओ तो हम तुम्हारे साथ चलें।' नहुष ने वैसा ही किया, पर ताव में आ मार्ग में वे ऋषियों से बोले 'सर्प सर्प—(जल्दी चलो)'। इस पर क्रुद्ध हो अगस्त्य मुनि ने शाप दिया कि 'तू सर्प हो जा।' यह स्वर्गभ्रष्ट हो सर्प बने और द्वापर में धर्मराज युधिष्ठिर द्वारा मुक्त हुए।

नारद:—

भागवत के अनुसार यह वेदज्ञ ब्राह्मणों में से किसी एक की दासी से उत्पन्न हुए थे। इनका बचपन उन तपस्वियों की सेवा में बीता। एक बार उनका उच्छिष्ट पा यह दोषों से छूट गये। इन्होंने ऋषियों से अनेक धर्मगाथाएं सुनीं। अभी यह पांच बरस के ही थे कि इनकी मां, नाग से डसी जाने पर, संसार से चल बसी। अब नारद

सांसारिक मोह जाल से स्वतन्त्र हो गये और हरिकीर्तन करते हुए उत्तर दिशा की ओर चल दिये। उन्होंने अनेक देश देशान्तर लांघे। भूख और प्यास के लिये वन्य फल तथा पावन झरनों का नीर था। एक दिन सन्ध्या समय यह एक पीपल के नीचे समाधिस्थ हुए और इन्हें श्री भगवान् के दर्शन हुए। बरसों तपस्या चलती रही। यह बूढ़े हुए और काल पा लोकान्तरित हुए। सृष्टि की रचना के समय मरीच आदि मुनियों के साथ यह भी अवतीर्ण हुए। हरिकीर्तन के सहारे यह भगवान् के पार्षद और इच्छाचारी मुनि बने।

विष्णु पुराण में आता है कि जब ब्रह्मा जी ने अपने पुत्रों को प्रजासर्जन में जोड़ा, तब नारद जी ने आपत्ति की। इस पर ब्रह्मा जी ने रूठ कर शाप दिया कि—'तुम सदा लोक लोकान्तरों में फिरते रहो और किसी एक स्थान में न टिको'। तब से यह सदा संसार का चक्कर लगाते रहते हैं।

इनकी वीणा हरिकीर्तन के लिये प्रख्यात है। साथ ही इनका स्वभाव कलहप्रिय बताया जाता है।

इन्होंने दक्षप्रजापति के हर्यश्व नामक पुत्रों को, जो पिता की आज्ञा से सृष्टि-रचना में संलग्न थे, ज्ञानमार्ग दिखाकर प्रजासर्जन से विमुख कर दिया। यह जानकर दक्ष दुःखी हुए। ब्रह्मा के कहने पर दक्ष ने फिर एक सहस्र पुत्र उत्पन्न किये। उन शबलाश्व नामक ऋषियों को भी नारद जी ने वही पट्टी पढ़ाई, जिससे उन्होंने भी अपने भाइयों का अनुसरण किया। दक्ष यह जानकर बहुत दुःखी हुए और उन्होंने नारद जी को शाप दिया कि—'दो घड़ी से अधिक एक स्थान पर ठहरोगे तो तुम्हारा माथा फूटने लगेगा"।

नारद वचनः—

एक समय जानकी जी पार्वतीपूजन के लिये जारही थीं कि उनकी नारद से भेंट हो गई। सीता जी के प्रणाम करने पर मुनि ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि—'इसी बाग में तुम पहले पहल पतिदेव का साक्षात्कार करोगी और इस स्थान पर जिसे देख कर तुम्हारा मन आकृष्ट हो जाय उसे ही तुम अपना पतिदेव जानना'।

परशुरामः—

जमदग्नि ऋषि को रेणुका स्त्री से पांच पुत्र हुए—समन्वान्, सुषेण, वसु, विश्वावसु और परशुराम। एक दिन रेणुका गङ्गातट जल भरने गई। वहां राजा चित्ररथ की स्त्रियों के साथ जलविहार करते देख, कामपीड़ित हो वह देर करके लौटी।

ऋषि ने उसकी दशा को जान, क्रुद्ध हो प्रत्येक पुत्र को मातृवध की आज्ञा दी। जब किसी भी पुत्र से यह दारुण कर्म न हो सका तब परशुराम उठे और उन्होंने पिता की आज्ञा बजाई। पिता ने प्रसन्न हो वर मांगने को कहा। परशुराम ने माता के लिये पुनरुज्जीवन और अपने लिये दीर्घायु तथा अजेयता मांगी। एक दिन कार्तवीर्य अर्जुन जमदग्नि के आश्रम पर आया और आश्रम को तहस-नहस कर उनकी होमधेनु के वत्स को लेकर चलता बना। जब परशुराम को इस दुर्घटना का सूत मिला तब वह कार्तवीर्य के साथ जूझे और उन्होंने उसकी सब भुजाएं तराश डालीं। कार्तवीर्य के साथियों ने एक दिन अकेले में छापा मारकर इनके पिता को मार डाला। परशुराम ने जमदग्नि को मरा देख विलाप किया और अन्त में संपूर्ण क्षत्रियों के विध्वंस की प्रतिज्ञा की। प्रतिज्ञा पूरी कर चुकने पर उन्होंने अश्वमेध यज्ञ रचा और बाद में विजित पृथ्वी कश्यप को दान दे डाली। कश्यप ने इने गिने क्षत्रियों की रक्षा के निमित्त परशुराम जी से कहा कि 'अब यह पृथ्वी हमारी हो चुकी, आप दक्षिण समुद्र की ओर चले जायं'।

प्रह्लाद :—

भक्त प्रह्लाद दैत्यराज हिरण्यकशिपु के पुत्र थे। जब दैत्यराज तप के लिये गया तब देवताओं ने दैत्यों पर चढ़ाई करके उन्हें भगा दिया। इन्द्र प्रह्लाद की माता को अपने साथ ले चले पर नारद जी के कहने पर वह उसे उनके आश्रम में छोड़ गये। यहीं गर्भस्थ प्रह्लाद हरि-कीर्तन सुनते थे, जिससे बचपन ही से वे परमात्मा के भक्त बने। हिरण्यकशिपु ने इन्हें भगवद्भक्ति से विचलित करने के लिये अनेक प्रयास किये किन्तु सब निष्फल। इसके लिये उसने इन्हें भांति भांति के कष्ट दिये। अन्त में भगवान् ने नृसिंह रूप धारण कर प्रह्लाद की रक्षा की और हिरण्यकशिपु का संहार किया।

बलि :—

यह दैत्यराज प्रह्लाद के पौत्र थे और अत्यन्त धर्मनिष्ठ थे। जब इन्होंने देवताओं को परास्त कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया, तब देवताओं की माता अदिति ने भगवान् की आराधना की। विष्णु भगवान् ने प्रसन्न हो उनके गर्भ से वामन अवतार लिया। इनके यज्ञोपवीत के समय बलि ने सौ अश्वमेध यज्ञ करना आरम्भ कर दिया था, इससे ये यज्ञमण्डप में पधारे। बलि ने इनके तेज को देख स्वयं इनका स्वागत किया और अर्घ्यदानानन्तर इन्हें वर मांगने को कहा। वामन जी ने तीन पैर पृथ्वी मांगी। शुक्राचार्य के मना करने पर भी बलि ने अंजलि में जल भर तीन पैर भूमि दान कर दी। भगवान् ने विराट रूप धारण कर दो पग में संसार नाप लिया और तीसरे पग के बदले में बलि

के शरीर को लिया। वामन जी ने प्रसन्न हो उसे सुतल लोक का राज्य दिया और स्वर्ग देवताओं को दिला दिया।

वेनु :—

ध्रुव के वंश में राजा अङ्ग हुए जो बड़े धार्मिक थे। इनका पुत्र वेनु हुआ। यह कठोर कुकर्मी था और प्रजा को भांति भांति के दुःख देता था। राजा अङ्ग खिन्न हो तप के लिये वन चले गये और उनकी अनुपस्थिति में ब्राह्मणों ने वेनु का राज्याभिषेक कर दिया। गद्दी पर बैठ वेनु मनमाने अत्याचार करने लगा। प्रजा में हाहाकार मचने पर ब्राह्मणों ने उसे भस्म कर दिया। इसी के पुत्र ईश्वर के अवतार राजा पृथु हुए।

ययाति :—

यह चन्द्रवंशी राजा नहुष के पुत्र थे। इनकी पहली स्त्री दैत्यगुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी और दूसरी दैत्यराज वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा थी। पहली से यदु तथा तुर्वसु और दूसरी से द्रुह्यु, अनु और पुरु नामक पुत्र हुए। शुक्राचार्य के शाप से जब ययाति जराजीर्ण हुए, तब उन्होंने अपने पुत्र पुरु के कहने पर उसका यौवन ले उसे अपना बुढ़ापा दे दिया। कुछ दिन और यौवन के रंग देख उन्होंने उसे फिर पुरु को लौटा दिया और उसे राज्याभिषिक्त कर आप वन को चले गये। वहां शरीर त्याग कर स्वर्ग गये और स्वर्ग समाप्ति पर फिर अपने दौहित्रों के यज्ञमण्डप में अवतीर्ण हुए। तपस्विनी कन्या माधवी तथा दौहित्रों के पुण्यफल से इन्हें फिर स्वर्गप्राप्ति हुई।

रन्तिदेव :—

यह राजा बड़ा दानी था। अशेष दान दे डालने पर एक बार उसे अड़तालीस दिन तक पानी तक पीने को न मिला। उंचासवें दिन जब भोजन के लिये कुछ सामग्री मिली तब क्रम से एक ब्राह्मण, शूद्र तथा अतिथि कुत्ते को लिये आ पहुँचे और राजा की सारी भोजनसामग्री इन्हीं के आतिथ्य में बस हो गई। केवल जल बच गया, जिसे पीने को इन्होंने ओक की ही थी कि एक चाण्डाल आ पहुँचा और उसने जलयाचना की। राजा ने हंसते हंसते जल भी दे दिया। उनके दानभाव पर प्रसन्न हो भगवान् ने उन्हें मोक्ष-धाम दिया।

रामनाम का माहात्म्य :—

(१) एक समय ब्रह्मा जी ने देवताओं से पूछा कि तुम सब में प्रथम पूजनीय कौन है। देवता आपस में बहसने लगे। ब्रह्मा जी ने कहा कि जो पृथ्वी की परिक्रमा

करके सब से पहले हमारे पास लौटेगा उसी को प्रथम स्थान मिलेगा। सब देवता अपने अपने वाहनों पर चले, पर गणेश जी अपने वाहन मूसे को देख अनमना हुए। उसी समय नारद जी उधर आ निकले। उनके कहने पर गणेश जी पृथ्वी पर रामनाम लिखकर और उसी की परिक्रमा कर ब्रह्मा जी के पास लौट आये। ब्रह्मा जी ने रामनाम का प्रभाव पहचान कर इन्हें प्रथम पद दिया।

(२) एक समय महादेव जी ने पार्वती से भोजन करने को कहा। उन्होंने उत्तर दिया कि मुझे अभी सहस्रनाम का पाठ करना है। महादेव जी ने कहा एक बार राम नाम लेकर भोजन कर लो। उन्होंने वैसा ही किया। एक बार लिया रामनाम सहस्र नाम के बराबर है।

(३) समुद्र मथन के समय हलाहल विष प्रकट हुआ, जिसको देख देवता थरथरा उठे और शिव जी की शरण पहुंचे। शिव जी ने संसार की रक्षा के निमित्त हलाहल को पी लिया। उनके हृदय में श्रीराम का निवास था, इसलिये उन्होंने विष को गले में ही रोक लिया।

रावण-पराजय :—

एक बार रावण सहस्रार्जुन से युद्ध करने गया। उसने इसे बांध लिया और पुलस्त्य ऋषि के कहने पर छोड़ा।

(२) रावण किष्किन्धा में वानरराज बालि से भी जूझा था। बालि ने उसे कांख में दबा चारों समुद्रों की परिक्रमा की और तब दया कर छोड़ दिया।

(३) कुबेर को हराकर जब रावण उनके पुष्पक नामक विमान में सवार हो कैलास की ओर चला, तब एकाएक विमान रुक गया। रावण नन्दीश्वर को देख उनके मर्कट-वदन पर हंसा। इस पर नाराज हो नन्दीश्वर ने इसे शाप दिया कि 'जा, बंदर ही तेरे वंश का विध्वंस करेंगे'। रावण ने क्रुद्ध हो पर्वत में अपनी भुजाएं घुसाकर उसे ऊपर उठा लिया। उधर शिव जी ने अँगूठे से पर्वत को दबाया। बोझ के मारे रावण की भुजाएं मरमरा उठीं। इस पीड़ा से उसने ऐसा भयंकर नाद किया जिससे त्रिलोकी कांप गई। फिर उसने सामगान कर शिव जी की स्तुति की और उन्हें प्रसन्न किया। शिव जी ने स्वतन्त्र कर रावणपदवी से विभूषित किया और साथ ही उसे प्रसिद्ध चन्द्रहास नामक खड्ग भी दिया।

राहु :—

समुद्रमथन के समय जब धन्वन्तरि वैद्य हाथ में अमृतकलश लिए प्रादुर्भूत हुए

तब दैत्यों ने उनसे अमृतकलश झपट लिया। देवता विष्णु भगवान् की शरण गए। तब विष्णु जी मोहिनीस्वरूप धारण कर रङ्गस्थल में पधारे। मोहिनी को देख दैत्य उस पर लट्टू हो गए और उसके मांगने पर अमृतकलश उसे दे दिया। मोहिनीरूप भगवान् ने देवता और दैत्यों को दो पांत में बिठाकर देवताओं को अमृत पिलाना आरम्भ कर दिया। जब वे अमृत परोसते परोसते दैत्यों की पंक्ति के समीप आए तब राहु नामक दैत्य, यह देखकर कि अमृत का दुहना रीता हुआ चाहता है, देवता रूप धारण कर देवताओं में खिसक आया। जब भगवान् ने उसे अमृत परोसा तब चन्द्र और सूर्य ने उसका रहस्य खोल दिया। भगवान् ने चक्र से उसका सिर काट डाला, किन्तु अमृतपान के कारण उसका सिर और कबंध अमर हो गए। ब्रह्मा जी ने इन दोनों को राहु और केतु नाम देते हुए अष्टम और नवम ग्रह बना दिया। आज भी यह ग्रह उस वैर के कारण अमावस और पूर्णिमा के पर्वों पर सूर्य और चन्द्र को ग्रस लेते हैं।

वाल्मीकि :—

यह अयोध्याधिपति श्रीराम के समकालिक, रामायण के प्रणेता आदि कवि थे। इनका आश्रम अयोध्या और मथुरा के बीच बताया जाता है। यद्यपि जन्म से यह ब्राह्मण थे तथापि किरातों के साथ रहने के कारण लूटमार करके अपना तथा अपने परिवार का पेट पालते। एक दिन, जिस वन में वे रहते थे, उधर सप्तर्षि आ निकले। यह उन पर झपटे। मुनियों ने ललकारा 'रे द्विजाधम ! पाप क्यों करता है' ! वे बोले 'मेरा परिवार भूखा है, तुम्हें लूटकर उन्हें भोजन दूंगा'। मुनियों ने कहा 'भाई ! घर जाकर पूछो कि तुम्हारे किये पापों में परिवार के आदमी हाथ बटायेंगे या नहीं'। वाल्मीकि ने जाकर एक एक से यह बात पूछी, किन्तु सब ने उत्तर दिया 'नहीं'। इस स्वार्थपरायणता से उनकी आत्मा को ठेस पहुँची और वे संसार से विरत हो ऋषियों की सेवा में जाकर ज्ञानार्जन करने लगे। पहले पहल वे 'राम' शब्द का शुद्ध उच्चारण न कर सके। तब ऋषियों ने इन्हें राम का उलटा 'मरा' 'मरा' जपने को कहा। समाधिस्थ हो यह वही शब्द जपने लगे। युग बीत गये और इनके शरीर पर वल्मीक जम गया। सहस्र युग व्यतीत होने पर जब सप्तर्षि लौटे तब उन्होंने इन्हें वल्मीक से निकलने को कहा। 'वल्मीक' में से निकलने के कारण इनका नाम 'वाल्मीकि' पड़ा।

शिवि :—

काशिराज शिवि के बानवे यज्ञ कर चुकने पर इन्द्र अग्नि को कबूतर बना और

स्वयं बाज बन यज्ञशाला में पहुंचे। कबूतर राजा की गोद में छिप गया। बाज ने अपना शिकार मांगा पर राजा ने देना न माना। इस पर बाज ने मरने की सौगंध खाई। राजा ने उसे उसके बराबर अपने शरीर का मांस देना चाहा। यह बात बाज को जंच गई। मांस तोलने के लिये तुला मंगाई गई। राजा ने खुरच खुरच कर शरीर का सारा मांस तराजू में रख दिया पर फिर भी मांस का पलड़ा उठा रहा। तब राजा ने गला काटकर तराजू में रखना चाहा। इस पर भगवान् ने प्रकट हो उन्हें मोक्षधाम दिया।

शबरी :—

इसके गुरु ने मरते समय कहा था कि 'तू अभी कुटी में रह। कुछ दिन बाद यहां राम और लक्ष्मण पधारेंगे, तब उनके दर्शन कर परमधाम को जाना'।

सहस्त्रबाहु :—

यह हैहयवंशी कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन महिष्मती पुरी का स्वामी था। जमदग्नि ऋषि का आश्रम नष्ट करने के कारण उनके पुत्र परशुराम जी द्वारा मारा गया था।

हरिश्चन्द्र :—

अयोध्यानरेश हरिश्चन्द्र प्रसिद्ध दानी और धर्मात्मा हो गये हैं। एक बार इन्द्र ने डाह से विश्वामित्र को इनकी परीक्षा के लिये उभारा। वे स्वप्न में इनसे सारी पृथ्वी दान लेकर सवेरे दक्षिणा लेने पहुंचे। दक्षिणा चुकाने के लिये महाराज पृथ्वी से न्यारी काशी में गये और वहां एक ब्राह्मण के हाथ अपनी स्त्री बेच आधी दक्षिणा चुकाई। शेष दक्षिणा के लिये वे स्वयं चाण्डाल के हाथ बिके। पुत्र रोहिताश्व के सांप से डसकर मरने पर उनकी स्त्री उसे श्मशान में लाई। पहले तो राजा ने उन्हें पहचाना ही नहीं। पर पहचान लेने पर भी जब उसने कर लिये बिना पुत्र को जलाने देना स्वीकार न किया तब रानी ने अपनी साड़ी फाड़कर कर देना चाहा। इस धर्मनिष्ठा पर भगवान ने प्रसन्न हो उन्हें तथा उनके प्रजावर्ग को स्वर्गधाम दिया।

हिरण्यकशिपु :—

देखिये 'प्रह्लाद'।